अभिव्यक्ति

वार्षिकी द्वितीयांक
अंक – 7

हिंदी गृह पत्रिका

वर्ष 2013

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र

विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र को वर्ष 2012–13 के दौरान सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने के उपलक्ष्य में कार्यालय को प्रदत्त शील्ड

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र को वर्ष 2012–13 के दौरान सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने के उपलक्ष्य में वरिष्ठ हिंदी अधिकारी को प्रदत्त शील्ड

अभिव्यक्ति

हिंदी गृह पत्रिका

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र
तथा
विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट
अहमदाबाद

वार्षिकी
वर्षः 2013
अंकः 7

परम संरक्षक

श्री आ.सी.किरण कुमार, निदेशक, सैक एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक

संरक्षक

श्री विलास पलसुले, निदेशक, डेकू एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, डेकू

मार्गदर्शन

श्रीमती मल्लिका महाजन, नियंत्रक, सैक एवं
सह-अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक

सलाहकार मंडल

श्री सी.एन.लाल, प्रधान-ईक्यूसीडी
डॉ.मनीष कुमार पंड्या, वैज्ञा./अभि.-एसएफ
श्री धर्मेश भट्ट, वैज्ञा./अभि.-एसएफ

प्रधान संपादक

श्री बी.आर.राजपूत
वरिष्ठ हिंदी अधिकारी

सह संपादक

श्रीमती नीलू एस.सेठ
हिंदी अधिकारी

प्रबंध संपादक

श्री सोनू जैन
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

सहयोग

सुश्री रजनी सेमवाल
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, एवं
श्री जी.एल.त्रिवेदी
वरिष्ठ सहायक

मुद्रण

पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग

छायांकन

फोटोलेब-ईपीएसए-एटीडीजी-आरएसीएफ

अनुक्रमणिका

पाठकों की कलम से	2
संदेशः निदेशक, सैक	3
संदेशः निदेशक, डेकू	4
संदेशः नियंत्रक, सैक	5
संपादकीय	6
सैक के वैज्ञानिक भारत के राष्ट्रपति से सम्मानित	7
सैक/डेकू में राजभाषा कार्यान्वयन	8
ऊष्मा की कुछ रोचक बातें (लेख)	10
वो गाँव मेरा जब याद आया (कविता)	15
आओ ऐसा जहाँ बनायें (कविता)	16
कीमती चीजें (कविता)	16
कम्प्यूटर पर शब्द संसाधनः भारतीय भाषा संदर्भ	17
मोहरा शतरंज का (कविता)	20
श्रद्धांजलि (कविता)	21
डायरी के अविस्मरणीय रेखांकित पन्ने (संस्मरण)	22
हास्य और हवा : तंदुरस्ती की दवा (लेख)	25
हिंदी से नाता (हिंदी की जुबानी) (कविता)	27
याद (कविता)	27
नया सवेरा (कहानी)	28
जो कुछ मैंने पाया वह रब की मेहरबानी है।	29
हिंदी माह रिपोर्ट 2013	30
अंतर केंद्र हिंदी तकनीकी संगोष्ठी रिपोर्ट	36

-***-

आवरण पृष्ठ पर इसरो के प्रथम अंतरग्रहीय अभियान 'मंगलयान' की झांकी प्रस्तुत की गई है।

नोटः यह आवश्यक नहीं है कि संपादक मंडल पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचारों और उनके द्वारा प्रस्तुत तथ्यों से सहमत हों।

पाठकों की कलम से.............

श्री दीपक यादव द्वारा रचित कविता "क्यों छोड़ दूं" हमारे वास्तविक जीवन को प्रतिबिंबित करती है। इसके अलावा श्रीमती शोभा छाबड़ा का लेख "हमारे बच्चेः भविष्य की धरोहर" बहुत ही उत्कृष्ट है। साथ ही, वैज्ञानिक उपलब्धियों को उल्लिखित करने वाले लेख काफी सराहनीय हैं, तथा हिंदी में किए जा रहे कार्य भी उल्लेखनीय हैं। पत्रिका का कवर पृष्ठ बहुत आकर्षक है। केंद्र द्वारा आयोजित हिंदी कार्यक्रमों की झलकियों से स्टाफ सदस्यों में हिंदी की लोकप्रियता झलकती है।

राधे श्याम गुप्ता

हिंदी अधिकारी II एवं ओ.एस.डी., भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद

हिंदी गृह पत्रिका अभिव्यक्ति का छठा अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सधन्यवाद शुभकामनाएँ। पुस्तक का मुख्य पृष्ठ सुंदर एवं आकर्षक है। इसके अंदर की सामग्री भी रुचिकर एवं ज्ञानवर्द्धक है। प्रेरणादायी संपादकीय से जानकारी प्राप्त होती है कि अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, निरंतर अद्यतन तकनीक का प्रयोग करते हुए उसकी जानकारी हिंदी में उपलब्ध कराने का प्रयास कर रहा है। इसी के साथ, सामाजिक सरोकार वाले लेख भी रुचिकर हैं। आशा है आने वाले समय में भी पाठकों को नित नए लेख और अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद के कार्य कलापों के संबंध में नयी-नयी जानकारियाँ पढ़ने को मिलेंगी।

किशोर सिंह

प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, अहमदाबाद

पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख, कविताएं, ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक हैं। आशा है कि आपका यह प्रयास निरंतर बना रहेगा और आप हमें समय-समय पर पत्रिका की प्रति भेजते रहेंगे।

राजेन्द्र सक्सेना

प्रधान, पीएण्डजीए (प्रशासन एवं सुरक्षा), सेमी कंडक्टर लेबोरेटरी, चंडीगढ़

इसमें अभिव्यक्त लेख एवं अन्य रचनाओं की गुणवत्ता अत्यंत सराहनीय है। इसके पीछे कार्यरत सभी व्यक्तियों को उत्कृष्ट कार्य के लिए हार्दिक बधाई। आगे भी इसी तरह के विषयों से संबंधित प्रकाशनों की उम्मीद की जाती है।

आर महेश्वरी अम्मा

हिंदी अधिकारी, विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र, तिरुवनन्तपुरम

रमणीय चित्र वाले मुखपृष्ठ के साथ-साथ कविताएँ, विचारपूर्ण लेख, तकनीकी लेख, राजभाषा से संबंधित लेख प्रशंसा के पात्र हैं। सराहनीय प्रयास के लिए बधाइयाँ स्वीकार करें।

सीना राजेंद्रन

हिंदी अधिकारी, इसरो उपग्रह केंद्र, बेंगलूर

इसमें प्रकाशित लेख एवं कविताएँ काफी सराहनीय हैं। अभिव्यक्ति के नए अंक की बधाई और भविष्य में प्रकाशित होने वाले अंकों के लिए शुभकामनाएँ।

अरूणकुमार शर्मा

हिंदी अनुवादक, द्रव नोदन प्रणाली केंद्र, बेंगलूर

*****

आ.सी.किरण कुमार,
निदेशक, सैक एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक

संदेश

राजभाषा कार्यान्वयन संघ सरकार के कार्यालयों में गतिमान प्रमुख गतिविधियों में से एक है। सामाजिक विकास के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का उपयोग भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन का मूलमंत्र है। हिंदी आम जनता की भाषा में आम जनता के साथ सीधा संपर्क कायम रखने में तो सहायक है ही, साथ ही भारत की संप्रभुता की भी परिचायक है। मात्र केंद्र सरकार में कार्य करने वाले व्यक्तियों को ही नहीं, अपितु हर भारतीय को अपनी भाषा में काम करने पर गर्व महसूस करना चाहिए।

मुझे इस बात से भी बड़ा संतोष मिलता है कि केंद्र के वैज्ञानिक, अभियंता और अन्य अधिकारीगण साहित्यिक सृजनशीलता में अभिरूचि रखते हैं और समय मिलने पर अपनी कलम के माध्यम से उसे अभिव्यक्ति भी प्रदान करते हैं।

मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि अंतरिक्ष उपयोग केंद्र/ विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट अपनी हिंदी गृहपत्रिका "अभिव्यक्ति" का सातवां अंक प्रकाशित कर रहा है। पत्रिका के विगत अंकों को पाठकों की खूब सराहना मिली है।

मेरी ओर से 'अभिव्यक्ति' के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

आ सी किरण कुमार
(आ.सी.किरण कुमार)

विलास पलसुले,
निदेशक, डेकू एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, डेकू

संदेश

भारतवर्ष में हिंदी को मात्र एक भाषा के रूप में ही सम्मान प्राप्त नहीं है, अपितु स्वतंत्रता संग्राम के जननायकों के अमोघ शस्त्र के रुप में भी पूजा जाता है, एक ऐसे अहिंसक शस्त्र के रुप में, जो देश के लाखों-करोड़ों लोगों के दिलों में आजादी का जज़्बा पैदा करता था। स्वतंत्र भारत में हिंदी का प्रयोग तो यथावत् रहा है। उसे जनसंपर्क और जनरंजन की भाषा के रुप में तो खूब सम्मान मिला है लेकिन प्रशासन, शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान, न्याय-व्यवस्था, आदि के क्षेत्र में हिंदी पर अंग्रेजी भारी पड़ती प्रतीत होती है।

वैज्ञानिक और तकनीकी प्रकृति के कार्यों में संलग्न संस्थानों के संबंध में प्रायः यह धारणा देखी जाती है कि इनमें राजभाषा हिंदी के प्रयोग के अवसर नगण्य हैं, लेकिन यह सच्चाई नहीं है। अंतरिक्ष विभाग के विभिन्न केंद्र/यूनिट मात्र प्रशासनिक क्षेत्र में ही नहीं अपितु तकनीकी क्षेत्र में भी हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दे रहे हैं। हिंदी में अभिरुचि रखने वाले केंद्र के वैज्ञानिक, अभियंता और अन्य कर्मचारी केंद्र में आयोजित अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी सृजनशीलता का परिचय देते रहते हैं। सैक/ डेकू की हिंदी पत्रिका 'अभिव्यक्ति' उसी सृजनशीलता की झांकी प्रस्तुत करती है।

इसरो/ अंतरिक्ष विभाग के विभिन्न केंद्र/ यूनिटों द्वारा प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं में 'अभिव्यक्ति' ने एक अलग पहचान बनाई है। मुझे विश्वास है कि 'अभिव्यक्ति' का यह अंक भी अपनी सफलता दोहराएगा।

मेरी ओर से 'अभिव्यक्ति' के सातवें अंक के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं।

विलास पलसुले
(विलास पलसुले)

मल्लिका महाजन
नियंत्रक एवं सह-अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति
अंतरिक्ष उपयोग केंद्र

संदेश

भाषा हमारी भावनाओं की संवाहक है। भावनाओं से लोग जुड़ते हैं, लोगों का जुड़ाव समाज को जन्म देता है और समाज की हलचलें सभ्यता और संस्कृति को जन्म देती हैं। समाज के विकास का पैमाना भी सभ्यता और संस्कृति के माध्यम से ही लक्षित किया जाता है।

ज्ञान-विज्ञान को सभ्यता के विकास के आधारभूत कारकों में महत्वपूर्ण माना गया है और ज्ञान-विज्ञान की सशक्त संवाहक भाषा ही है। भावनाओं से लेकर जीवन के लिए महत्वपूर्ण ज्ञान-विज्ञान के परिसंचरण का माध्यम भाषा है। इसलिए भाषा एक महत्वपूर्ण प्रत्यय है जो किसी भी व्यक्ति, समाज और देश की दशा व दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

भारतीय संविधान के कर्णधारों ने इस भूमिका के लिए हिंदी को चुना और केंद्रीय सरकार तथा उसके विभिन्न अंगों को यह दायित्व सौंपा कि वे हिंदी को जनमानस में लोकप्रिय बनाएं। भारतीय क्षेत्रीय भाषाओं की सहायता से हिंदी का सर्वांगीण विकास करें, जिससे हिंदी की सर्वस्वीकार्यता बने। इसके साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को भी हिंदी भाषा में आत्मसात कराएं, जिससे भारतीयों को अंग्रेजी की पराधीनता से मुक्ति मिल सके।

हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं का अभूतपूर्व योगदान रहा है। ये अपने विचारों को सरलतम भाषा में प्रकट करके जहां एक ओर लेखकों में सृजनशीलता को बढ़ावा देती है, वहीं पाठक उन्हीं विचारों के साथ सहृदयता स्थापित कर ज्ञान और मनोरंजन की क्षुधा की पूर्ति करते हैं।

अभिव्यक्ति के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद।

(मल्लिका महाजन)

संपादकीय............

भाषा जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। भाषा के बिना संस्कृति और सभ्यता की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। मानव ने भाषा के माध्यम से अपनी प्रज्ञा को कई गुना बढ़ाया और सशक्त करके विकास के नवीन आयाम गढ़े। यदि हम कहें कि भाषा के अभाव में मानव का जीवन पशुवत् होता तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। मानव जीवन में भाषा के इसी अक्षुण्ण महत्व के कारण स्थानों के नाम भाषा के आधार पर पड़े अथवा भाषा के नाम स्थानों के नामों के अनुसार पड़े और उनका सामान्य परिचय भी भाषा के आधार पर गढ़ा गया जैसे स्पेनिश, इंग्लिश अथवा रूसी।

भाषा ने जहां मनुष्य को एक दूसरे से संपर्क का सशक्त माध्यम प्रदान किया वहीं भाषा ने ही व्यक्तियों को समूहों में विभाजित करने का कार्य भी किया। यूरोपीय देशों में विभाजन का सशक्त सीमांकन भाषा के आधार पर ही हुआ जो उनके व्यवहार, रहन-सहन और संस्कृति को प्रभावित करता रहा वहीं उनमें पारस्परिक वैमनस्य का कारण भी बनता रहा। निष्कर्ष यही है भाषा मानव के उत्थान-पतन, उन्नति-अवनति, साख्य-वैमनस्य और समृद्धि-दारिद्रय के महत्वपूर्ण कारकों में एक रही।

भारतवर्ष में भाषा के संबंध में एक मिथक बहुत अधिक प्रचलित है कि अंग्रेजी विकास की भाषा है और भारतीय भाषाएं हमें आवश्यक विकास एवं समृद्धि देने में उतनी सक्षम नहीं हैं। इस मिथ्या श्रद्धान के वशीभूत होकर आज भारत में अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की संख्या बेतहाशा बढ़ गई है और अभिभावक भी अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देने के लिए लालायित हैं।

यदि मातृभाषा में शिक्षा दी जाए तो अंग्रेजी का अपेक्षित ज्ञान न रखने पर भी माता-पिता स्वयं अपने बच्चों की प्रगति की निगरानी कर सकते हैं। लेकिन अंग्रेजी शिक्षा का कड़वा सच यह है कि शिक्षकों, बच्चों और अभिभावकों का सारा श्रम विदेशी भाषा के साथ संघर्ष में ही बीत जाता है। मूलभूत विषयों की समझ के मामले में बच्चे पिछड़ जाते हैं। यही कारण है कि शिक्षा के लिए भारत में खड़ा किया गया इतना बड़ा तंत्र अपेक्षित कार्यबल पैदा नहीं कर पा रहा है। तकनीकी और सूचना के लिए आज भी हम विदेशों पर निर्भर हैं।

हमें समग्र विकास में स्वभाषा के महत्व को समझना होगा। आर्यभट्ट, वराहमिहिर, पाणिनी, चरक, धन्वंतरि, टोडरमल जैसे भारतीय वैज्ञानिकों और चिकित्साशास्त्रियों के द्वारा स्थापित सिद्धांतों का उपयोग आज सारा विश्व कर रहा है। इन पुराविदों के समय शिक्षा तंत्र इतना सुसंगठित और विशाल नहीं था, फिर भी अमूल्य अन्वेषणों के जन्मदाता बने। आज भारत का सुसंगठित और व्यापक बुनियादी ढांचा अंग्रेजी की वेदी पर बलि चढ़ रहा है और मूलभूत शिक्षा कुंठित होकर रह गई है।

\- संपादक

सैक वैज्ञानिक भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित

इसी वर्ष राजभाषा विभाग द्वारा पत्र-पत्रिकाओं में हिन्दी में उत्कृष्ट लेखों हेतु पुरस्कार योजना प्रारंभ की गई। इस योजना के तहत दिल्ली भू-केंद्र एवं अंतरिक्ष उपयोग केंद्र के कार्मिकों को वर्ष 2012-13 के लिए निम्नानुसार पुरस्कार प्राप्त हुए-

लेख का नाम	लेखक का नाम	पुरस्कार
अंतरिक्ष आधारित सौर पावर	**श्री काली शंकर, सेवानिवृत्त वैज्ञानिक, दिल्ली भू केंद्र, अंतरिक्ष उपयोग केंद्र**	**द्वितीय**
खनिज अन्वेषण एवं जनहित के अन्य कार्यों हेतु मानव निर्मित उपग्रह एक तकनीकी परिदृश्य	**श्री कमलेश कुमार बराया, वैज्ञा./अभि. एसएफ, अंतरिक्ष उपयोग केंद्र**	**तृतीय**

ये सभी पुरस्कार हिन्दी दिवस के अवसर पर 14 सितंबर, 2013 को विज्ञान भवन नई दिल्ली में आयोजित समारोह के दौरान माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा विजेताओं को प्रदान किए गए।

भारत के माननीय राष्ट्रपति से पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री कमलेश कुमार बराया, वैज्ञा./अभि. एसएफ, अंतरिक्ष उपयोग केंद्र

भारत के माननीय राष्ट्रपति से पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री काली शंकर,सेवानिवृत्त वैज्ञानिक,दिल्ली भूकेंद्र,अंतरिक्ष उपयोग केंद्र

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र/ विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट में राजभाषा कार्यान्वयन

सितंबर 2013 तक सैक/ डेकू में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित गतिविधियों का सुचारू ढ़ंग से संचालन किया गया; जिनका संक्षिप्त ब्योरा यहाँ प्रस्तुत हैः-

उपलब्धियां

- अंतरिक्ष उपयोग केंद्र को अहमदाबाद नगर में केंद्रीय कार्यालयों की श्रेणी में वर्ष 2012-2013 के दौरान सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद की ओर से 15 जुलाई 2013 को भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद के प्रेक्षागृह में संपन्न अहमदाबाद नराकास की 66वीं बैठक के दौरान प्रथम पुरस्करार प्रदान किया गया। श्री एस.के राय, अध्यक्ष, नराकास/ मुख्य आयकर आयुक्त (सीसीए), अहमदाबाद के कर-कमलों से केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक श्री राजेश खंडेलवाल, ग्रुप प्रधान, पीपीजी ने प्रथम पुरस्कार के रूप में शील्ड व प्रमाणपत्र ग्रहण किया। सैक के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी श्री बी.आर.राजपूत को भी सैक में राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के उपलक्ष्य में प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

विश्व हिंदी दिवस

- **अंतरिक्ष उपयोग केंद्र तथा विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट (डेकू), अहमदाबाद में 10 जनवरी 2013 को विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर सैक तथा डेकू के कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री राजेश खंडेलवाल, ग्रुप प्रधान, पीपीजी, डेकू ने की। सैक एवं डेकू में विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में प्रभाग स्तर पर हिंदी में विशेष कार्य करने के संबंध में नियंत्रक, सैक द्वारा एक परिपत्र भी जारी किया गया।**

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा विचार-विमर्श कार्यक्रम

- **संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा 03 अप्रैल 2013 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद के सदस्य कार्यालयों के कार्यालयाध्यक्षों के साथ विचार-विमर्श कार्यक्रम आयोजित किया गया। माननीय सांसदों ने सैक द्वारा किए जा रहे राजभाषा कार्यान्वयन की प्रसंशा की। इस अवसर पर सैक द्वारा प्रकाशित विविध सामग्रियों का प्रदर्शन भी किया गया।**

हिंदी माह

- **सैक/ डेकू में दिनांक 19 अगस्त 2013 से 18 सितंबर 2013 तक हिंदी माह का आयोजन किया गया। हिंदी माह के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ.घनानंद शर्मा, सेवानिवृत प्रोफेसर, सहजानंद आर्ट्स कॉलेज, अहमदाबाद उपस्थित रहे, समारोह की अध्यक्षता श्री शांतनु चौधरी, उप निदेशक-एसआईपीए, सैक ने की। माह के दौरान आयोजित हिंदी तथा हिंदीतर भाषा वर्गों के लिए आयोजित विभिन्न 12 हिंदी प्रतियोगिताओं में केंद्र के 1150 से भी अधिक स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया। कर्मचारियों के परिवार के सदस्यों (विवाहितियों और बच्चों) के लिए भी 05 हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिनमें 100 से भी अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। श्री आ.सी.किरण कुमार, निदेशक, सैक की अध्यक्षता में 18 सितंबर 2013 को अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (सैक) के विक्रम हॉल में पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री विलास पलसुले, निदेशक, डेकू भी उपस्थित रहे।**

राभाकास बैठक

- **वर्ष के दौरान राभाकास बैठकें नियमित रूप से आयोजित की गईं। बैठकों में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा की गई एवं निर्णय लिए गए तथा लिए गए निर्णयों पर कारवाई रिपोर्ट की भी समीक्षा की गई।**

राजभाषा कार्यशाला

- **सैक और डेकू, अहमदाबाद में कार्यरत प्रशासन क्षेत्र के सभी अधिकारियों के लिए 23 अप्रैल 2013 को एकदिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्रीमती मल्लिका महाजन, नियंत्रक, सैक ने की। कार्यशाला में कुल 33 अधिकारियों ने भाग लिया।**
- **सैक और डेकू, अहमदाबाद के नव नियुक्त प्रशासनिक सहायकों के लिए 26 जुलाई 2013 को एकदिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्रीमती के.एन.सरस्वती, वरि.प्रधान, क्रय एवं भंडार ने की। इनके अलावा, श्री एम.पलवेसम, प्रधान, कासाप्र और श्रीमती जी गीताकुमारी, प्रधान, लेखा एवं आंविस भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यशाला में कुल 32 कर्मचारियों ने भाग लिया।**

अनुवाद

- **केंद्र की मासिक प्रगति रिपोर्ट संबंधित प्रभाग को उपलब्ध का समयबद्ध हिंदी अनुवाद अग्रिम कार्रवाई हेतु (एमपीआर) कराया गया।**
- **डेकू के न्यूजलेटर स्पेस4यू का हिंदी अनुवाद किया गया।**

प्रकाशन

- **23 अप्रैल 2013 को में सैक/ डेकू की गृह पत्रिका "अभिव्यक्ति" के छठवें अंक का प्रकाशन किया गया। डेकू का न्यूजलेटर 'स्पेस4यू' का द्विभाषी संस्करण जारी किया गया।**

- **निदेशक, सैक के मार्गदर्शन में श्री सी.एन.लाल, प्रधान, ईक्यूसीडी तथा श्री दिनेश अग्रवाल, प्रधान, ईएफपीडी के विशेष प्रयासों के फलस्वरूप सैक के वैज्ञानिक/ अभियंताओं द्वारा विभिन्न तकनीकी विषयों पर हिंदी में निम्नानुसार सात पुस्तकें लिखी गईं :-**

पुस्तक का शीर्षक	लेखक
भारत की सांस्कृतिक धरोहर - झलकियां अंतरिक्ष से	श्वेता शर्मा, श्वेता मिश्रा एवं डॉ.अजय
उपग्रहों में ताप नियंत्रण	कमलेश कुमार बराया
उपग्रह संचार एवं नौसंचालन अनुप्रयोग क्षेत्रः एक झलक	जितेंद्र खर्डे
प्रतिबिंब, संकेत और डाटा प्रक्रमण में सीपाः सैक का योगदान	देवांग माकड़
उपग्रह संचार के सिद्धांत और ऐंटेनाः एक विहंगावलोकन	शीलेष वैष्णव
सागर के रंगः उपग्रह के संग	नीरा चतुर्वेदी एवं डॉ. अजय
सुदूर संवेदन हेतु विद्युत प्रकाशीय कैमरा - एक परिचय	संजीव मेहता ,बी एन शर्मा अमिय बिश्वास एवं अंकुर जैन

उक्त पुस्तकों की सीमिति प्रतियां सैक पुस्तकालय द्वारा मुद्रित की गईं, जिनका विमोचन श्री आ.सी.किरण कुमार, निदेशक, सैक, अहमदाबाद के कर-कमलों से किया गया।

प्रोत्साहन योजना

- **राजभाषा विभाग तथा अं.वि. के निर्देशानुसार वर्ष 2012-13 के दौरान अधिक से अधिक राजकीय कार्य मूल रूप से हिन्दी में करने हेतु सैक/डेकू/दिल्ली भूकेंद्र में लागू प्रोत्साहन योजना योजना के अंतर्गत निम्नलिखित कर्मचारियों को नगद पुरस्कार प्रदान किए गएः**

नाम	पदनाम	प्रभाग	पुरस्कार
श्री बीनु देवपालन नायर	सहायक	पीजीए	प्रथम
श्री शाह जैमिन कुमार डी	वरिष्ठ सहायक	पीजीए	प्रथम
श्री वेद प्रकाश	वरिष्ठ सहायक	पीजीए	प्रथम
श्री किशोर डी वाघेला	कनिष्ठ अभियंता	ईएफपीडी	प्रथम
सुश्री चंपा बी ठक्कर	वरिष्ठ सहायक	पीजीए	प्रथम
श्री मुकेश मिश्र	पुस्तकालय सहायक बी	पुस्तकालय	द्वितीय
श्री राजेश शास्त्री	वरिष्ठ सहायक	डेकू	द्वितीय
श्री वी के जैन	प्रधान	एसपीओ/एसएनपीएपीओ	द्वितीय
श्री कमलेश कुमार बराया	वैज्ञा/अभि एसईएफ	एसटीएडी/एसटीएजी	द्वितीय
श्रीमती दक्षाबेन बी पटेल	कार्यालय लिपिक	पीजीए स्थापना	तृतीय
श्रीमती सरला एन चावला	वरि परि सहायक	पीजीए	तृतीय
श्री निमेश मनोजकुमार के	वरि तकनीशियन बी	ईक्यूसीडी/ईएसएफए	तृतीय
श्री दवे निकुंज देवेन्द्रभाई	स. वा. ए	पीजीए	प्रथम

तकनीकी प्रभागों/ अनुभागों के लिए प्रोत्साहन योजना

- **केंद्र में तकनीकी प्रभागों/अनुभागों के लिए कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने हेतु लागू प्रोत्साहन योजना वर्ष 2011-2012 के अंतर्गत निर्धारित प्रपत्र में 6 तकनीकी प्रभागों से नामांकन प्राप्त हुए हैं, जिनमें से निम्नलिखित विजेता प्रभागों को निदेशक, सैक द्वारा शील्ड एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गएः**

क्रम सं.	प्रभाग का नाम	पुरस्कार
1.	ईएफपीडी	प्रथम
2.	संरचना एवं तापीय विश्लेषण प्रभाग	द्वितीय
3.	पुस्तकालय	तृतीय

तकनीकी व्याख्यान

- **अंतरिक्ष उपयोग केंद्र के विभिन्न तकनीकी प्रभागों में राजभाषा में विविध कार्य किए जा रहे हैं। इसी अनुक्रम में एसईडीए के अंतर्गत श्री सजी कुरियाकोस, उप निदेशक, एसईडीए की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया गया है, जिसके माध्यम से राजभाषा संबंधी विविध गतिविधियां संपन्न की जा रही हैं। इसी अनुक्रम में एसईडीए के वैज्ञानिक श्री अश्वनी कुमार द्वारा 'अंतरिक्ष यान प्रचालन क्रियाएं और अंतरग्रहीय अभियान - एक परिचय' विषय पर 19 सितंबर 2013 को हिंदी में व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसे श्रोताओं ने खूब सराहा।**

संगोष्ठी

- **अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद में दिनांक 14-15 अक्तूबर 2013 को"अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की आपदा प्रबंधन में भूमिका" विषय पर दो दिवसीय अंतर केंद्र हिन्दी तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में इसरो/ अंवि के विभिन्न केंद्र/यूनिटों से 100 से अधिक लेख प्राप्त हुए, जिनमें से 60 लेखों की प्रस्तुति हेतु स्वीकृति दी गई।**

वेबसाइट

- **रिपोर्ट अवधि के दौरान सैक की आधिकारिक वेबसाइट का नया संस्करण 'व्योम' के अंग्रेजी अपडेट के साथ नियमित रूप से हिंदी रूपांतरण अपलोड किए गए।**

- **सैक पुस्तकालय की वेबसाइट भी हिंदी में उपलब्ध है।**

ऊष्मा की कुछ रोचक बातें

लेखक ने यांत्रिकी अभियांत्रिकी में स्नातक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मुंबई से तापीय एवं तरल अभियांत्रिकी में स्नातकोत्तर एवं जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से इटालियन भाषा में प्रवीणता का डिप्लोमा की शिक्षा ग्रहण की है। वर्तमान में अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र के संरचना एवं तापीय विश्लेषण प्रभाग में वैज्ञानिक / अभियंता - एसई के पद पर कार्यरत है। केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद, नई दिल्ली द्वारा आयोजित अखिल भारतीय वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों पर आपके लेख दो बार आचार्य सत्येन पुरस्कार से सम्मानित किए गए हैं। हाल में तकनीकी विषय पर हिंदी में एक मौलिक लेख के लिए आपको राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया गया। "उपग्रहों में ताप नियंत्रण" नामक पुस्तक का विमोचन सैक निदेशक द्वारा किया गया।

कमलेश कुमार बराया

दैनिक जीवन में ऊष्मा का अनुभव हम ठण्डक और गर्मी के रुप में करते हैं। ये अनुभव सभी के लिए सामान्य होते हैं। कभी-कभी ऊष्मा के सामान्य अनुभवों के पीछे भी रोचक वैज्ञानिक जानकारियां छिपी होती हैं, तो कई बार ऊष्मा के रोचक अनुभवों के पीछे सामान्य वैज्ञानिक कारण होते हैं। इस लेख में ऊष्मा से संबंधित ऐसे ही कुछ रोचक प्रश्नों के हल को सरल भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

<u>हवा के प्रवाह से हमें ठण्ड क्यों महसूस होती है ?</u>

हम सबने अनुभव किया है कि ठण्ड के मौसम में हवा के शांत होने पर हमें इतनी ठण्ड नहीं लगती है, जितनी कि हवा के चलने पर लगती है। क्या हम स्पष्ट रूप से यह जानते हैं कि ऐसा क्यों होता है ? केवल जीवधारी ही हवा के चलने पर ठण्ड महसूस करते हैं। हवा के चलने से किसी निर्जीव वस्तु के तापमान में कोई कमी नहीं आती है। हवा चलने पर हमें ठण्ड दो कारणों से लगती है। पहला कारण यह है कि चलती हुई हवा हमारे शरीर की गर्मी को तेजी से ले जाती है। हमारे शरीर के चारों ओर हवा का आवरण शरीर की गर्मी के कारण गर्म हो जाता है। हवा के चलने पर शरीर के चारों ओर गर्म हवा के स्थान पर ठण्डी हवा आ जाती है, जिससे हमारे शरीर से ऊष्मा तेजी से निकलने लगती है और हमें ठण्ड महसूस होने लगती है। हवा जितनी तेज चलेगी, उतना ही अधिक ठण्डी हवा से हमारा संपर्क बढ़ेगा। इसलिए हमें और अधिक ठण्ड महसूस होगी।

दूसरा कारण यह है कि हमारे शरीर की त्वचा से नमी अर्थात् पसीना निकलता है। ठण्ड के मौसम में भी हमारे शरीर की त्वचा से नमी निकलती है। नमी के वाष्पीकरण के लिए ऊष्मा की आवश्यकता होती है जिसे वह हमारे शरीर एवं त्वचा के समीप की हवा से लेती है। हवा के स्थिर होने पर नमी कम निकलती है क्योंकि त्वचा के समीप हवा वाष्प से जल्दी ही संतृप्त हो जाती है जिससे त्वचा से वाष्पीकरण की प्रक्रिया धीमी हो जाती है। लेकिन हवा में गति होने पर त्वचा के संपर्क में अधिक असंतृप्त हवा तेजी से आने लगती है जिससे पसीना तेजी से निकलने लगता है तथा वह वाष्पीकृत होता हुआ तेजी से शरीर से ऊष्मा ले जाता है।

<u>लैम्प की बत्ती को पारदर्शी ग्लास से क्यों ढका जाता है ?</u>

हम सभी जानते हैं कि मिट्टी के तेल या केरोसिन से जलने वाले लैम्प की लौ को पारदर्शी ग्लास के कवच से ढका जाता है। यह ग्लास का कवच बेलनाकार होता है और दोनों ओर से खुला होता है। क्या हम लैम्प की लौ को पारदर्शी ग्लास के कवच से ढकने का कारण जानते हैं ? पहली नजर में हमें लगता है कि लौ को तेज हवा के झोकों से बचाने के लिए ग्लास के कवच से ढका जाता है। यह कारण भी गलत नहीं है लेकिन यह मुख्य कारण नहीं है। लैम्प की लौ को ग्लास के कवच से ढकने का मुख्य कारण तेल के दहन को त्वरित कर लौ की दीप्ति या चमक को बढ़ाना है। यह ग्लास का कवच जलती हुई लौ के लिए चिमनी का कार्य करता है।

लौ के जलने के कारण ग्लास के कवच के अंदर लौ के ऊपर वाली हवा कवच के बाहर वाली हवा से अधिक गर्म हो जाती है। गर्म हो जाने के कारण यह हवा हल्की हो जाती है और आर्किमिडीज के सिद्धांत के अनुसार ठण्डी हवा गर्म हवा को ऊपर की ओर धकेलती है। लैम्प के ग्लास के कवच में नीचे की ओर हवा के प्रवेश के लिए मार्ग बना होता है जहां से ठण्डी हवा ग्लास के कवच में प्रवेश करती है। कवच के ऊपर की ओर गर्म हवा के निकास के लिए छिद्र होते हैं। इस तरह ग्लास के कवच में नीचे से ऊपर की ओर हवा का प्रवाह स्थापित हो जाता है। यह प्रवाह दहन के कारण बनी गैसों को कवच से बाहर निकाल देता है तथा लौ को जलने के लिए लगातार शुद्ध हवा उपलब्ध कराता रहता है। लौ को शुद्ध हवा की प्रचुर उपलब्धता के कारण लौ में ईंधन का दहन तेजी से होता है और इसी कारण लौ और अधिक चमक के साथ जलती है। ग्लास का कवच लंबाई में जितना अधिक होगा उतना ही ग्लास के अंदर की ठण्डी हवा एवं बाहर की गर्म हवा के वजन में अंतर होगा,

जिसके फलस्वरूप शुद्ध हवा का प्रवेश भी अधिक मात्रा में होकर दहन को त्वरित करने में सहायक होगा। इस तरह यह कवच कारखानों में चिमनी की तरह कार्य करता है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि कारखानों में चिमनी इतनी लंबी क्यों होती है।

पानी से आग क्यों बुझ जाती है ?

यह एक बहुत ही सरल प्रश्न है लेकिन फिर भी सभी लोग इस प्रश्न का सही उत्तर नहीं दे पाते हैं। पानी जलती हुई वस्तु के संपर्क में आने पर वाष्प में बदल जाता है, इस प्रक्रिया में पानी बहुत सारी ऊष्मा अवशोषित कर लेता है क्योंकि ठण्डे पानी को वाष्प में परिवर्तित करने के लिए उसे उबाल बिंदु तक पहुंचाने के लिए आवश्यक ऊष्मा की तुलना में लगभग पांच गुना अधिक ऊष्मा की आवश्यकता होती है। इसलिए जलती हुई वस्तु से वाष्पीकरण के कारण काफ़ी मात्रा में ऊष्मा को हटा लिया जाता है, परिणामस्वरूप वस्तु के जलने की गति मंद पड़ जाती है। इसके अतिरिक्त वाष्प पानी से कई गुना अधिक आयतन घेरती है। वाष्प जलती हुई वस्तु के चारों ओर एक आवरण का निर्माण कर उसे ढक लेती है जिससे जलने वाली वस्तु का शुद्ध हवा से संपर्क काफ़ी हद तक कम हो जाता है। इस तरह वाष्प से घिरे होने के कारण वस्तु का दहन मुश्किल हो जाता है और धीरे-धीरे आग बुझने लगती है।

क्या आग से आग को बुझाया जा सकता है ?

हमने कई बार जंगलों में आग लगने की ख़बरे सुनी हैं। आपको यह जानकर शायद आश्चर्य होगा कि जंगल में आग बुझाने के लिए जब कोई विकल्प न हो, तब आग बुझाने के लिए आग का भी सहारा लिया जा सकता है। इसके लिए आग जिस ओर लग रही होती है उसके सामने कुछ दूरी पर दूसरी आग लगाई जाती है जैसा कि चित्र1 में दिखाया गया है। दूसरी आग पहली आग की ओर बढ़ती है तथा जलते हुए दहन योग्य सभी पदार्थों को नष्ट कर देती है। जब दोनों आग मिलती हैं तब दोनों के लिए दहन योग्य सब पदार्थ नष्ट होने के कारण दोनों ही आग बुझ जाती हैं।

लेकिन हमारे मन में यह प्रश्न उठना स्वभाविक है कि क्या दूसरी आग हमेशा पहली आग की ओर ही बढ़ेगी ? दूसरी आग भी उसी दिशा में आगे बढ़ सकती है जिस दिशा में पहली आग बढ़ रही है क्योंकि दोनों आग के लिए हवा के प्रवाह की दिशा तो समान ही होगी।

चित्र -1 आग के द्वारा आग बुझाना

आग लगने के कारण हवा गर्म होकर नीचे से ऊपर की ओर उठती है तो आग के समीप ठण्डी हवा का प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर हो जाता है। हवा के इस संचरण के कारण आग के समीप ठण्डी हवा का प्रवाह आग की ओर हो जाता है जो कि मुख्य हवा के विपरीत दिशा में होता है। इसलिए दूसरी आग उसी समय लगाई जानी चाहिए जब उस स्थान पर हवा का प्रवाह पहली आग की ओर हो जाए तभी दूसरी आग पहली आग की ओर बढ़ेगी अन्यथा वह आग को और आगे की ओर बढ़ा देगी। इसलिए दूसरी आग लगाने का समय बहुत चतुराई से निश्चित करना पड़ता है। दूसरी आग समय से पहले लगा देंगे तो उस स्थान पर मूल आग के कारण विपरीत दिशा में हवा का प्रवाह स्थापित नहीं होने के कारण यह आग पहली आग की ओर बढ़ने के बजाय दूसरी ओर बढ़ेगी। अगर आग देर से लगाएंगे तो पहली आग काफ़ी नज़दीक पहुंच चुकी होगी।

क्या उबलते हुए पानी की सहायता से पानी को उबाला जा सकता है ?

हम एक पानी से भरा जार लेते हैं और उसे गैस स्टोव के बर्नर पर गर्म होने के लिए रख देते हैं। अब हम कांच की एक परखनली लेते हैं और उसका लगभग आधा भाग पानी से भर देते हैं। अब हम परखनली में भरे पानी को स्टोव पर रखे जार में पानी के द्वारा उबालने का प्रयास करते है। इसके लिए परखनली को जार के पानी में इतना डुबो कर रखते हैं कि परखनली जार के तल को स्पर्श नहीं करें तथा जार का पानी परखनली के अंदर भी न घुस पाएं। परखनली को एक धागे से लटकाकर भी इस दशा में आसानी से रखा जा सकता है, जैसा कि चित्र 2 में दिखाया गया है।

अब हम देखते हैं कि गैस स्टोव पर रखे जार का पानी गर्म होकर उबलने लग जाता है। परखनली में भरा पानी भी गर्म होने लगता है लेकिन हम काफी समय तक इंतजार करने पर भी देखते हैं कि परखनली के पानी में उबाल नहीं आता है। हम चाहें जितने ही समय तक जार के पानी को उबालते रहें, लेकिन परखनली का पानी कभी नहीं उबलेगा। क्या आप सोच सकते हैं ऐसा क्यों होता है ?

हम जानते है कि सामान्य ताप एवं दाब की अवस्था में पानी 100°C पर उबलने लगता है, लेकिन पानी को उबालने के लिए 100°C तक गर्म करना ही काफ़ी नहीं होता है उसके बाद भी उसको वाष्प में परिवर्तित करने के लिए आवश्यक ऊष्मा की आपूर्ति करना जरूरी होता है। ठण्डे पानी को 100°C तक गर्म करने के लिए जितनी ऊष्मा चाहिए, यह ऊष्मा उसकी लगभग पांच गुना होती है।

जार में भरे पानी को 100°C पर पहुंचने के बाद भी उसे वाष्प में परिवर्तित करने के लिए ऊष्मा की आपूर्ति होती रहती है, क्योंकि जार के तल का तापमान 100°C से अधिक होने के कारण ऊष्मा का स्थानांतरण जार के तल से उसमें भरे पानी की ओर होता रहता है।

परखनली में भरे पानी का तापमान जार के उबलते हुए पानी के कारण 100°C पर तो पहुंच जाता है, लेकिन जार में उबलते हुए पानी का अधिकतम तापमान भी 100°C ही होता है। जब जार एवं परखनली दोनों का तापमान 100°C पर पहुंच जाता है तब समान तापमान होने के कारण जार के पानी से परखनली के पानी को ऊष्मा का स्थानांतरण रुक जाता है। ऊष्मा स्थानांतरण के लिए तापमानों में अंतर होना आवश्यक होता है। इसलिए परखनली के पानी को वाष्प में परिवर्तित होने के लिए अतिरिक्त ऊष्मा की आपूर्ति नहीं हो पाती है।

हमारे मन में यह प्रश्न उठ सकता है कि जैसा पानी जार में है वैसा ही परखनली में है, इन दोनों के बीच एक कांच की दीवार ही तो है, फिर भी दोनों के व्यवहार में अंतर है। इस अंतर का कारण यह है कि जार का पानी उसमें उठी संवहन धाराओं में भाग लेने के कारण उसके तल से प्रत्यक्ष संपर्क में आ जाता है जिसका तापमान 100°C से अधिक है। परखनली का पानी कांच की दीवार से पृथक होने के कारण जार में उठ रही संवहन धाराओं में भाग नहीं ले पाता, इसलिए वह जार के तल के संपर्क में नहीं आ पाता है। परखनली का पानी केवल उसके कांच के संपर्क में ही आ पाता है जिसका तापमान 100°C से ऊपर कभी नहीं हो पाता है।

अगर जार के पानी में नमक मिला दिया जाए तो परखनली का पानी उबलने लगेगा क्योंकि पानी में नमक मिलाने से उसका उबाल बिंदु बढ़ जाता है परिणाम स्वरूप अब जार के पानी का तापमान 100°C से अधिक हो जाता है।

क्या ठण्डे पानी से पानी को उबाला जा सकता है ?

हमने देखा कि उबलते हुए पानी की सहायता से तो पानी को नहीं उबाला जा सकता है। लेकिन क्या ठण्डे पानी की सहायता से पानी को उबाला जा सकता है ? हम देखते हैं कि यह कैसे संभव हो सकता है।

हमने देखा कि पानी में नमक मिलाने से परखनली का पानी उबलने लगता है। हम सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए परखनली के स्थान पर एक गोलाकार फ्लास्क लेते हैं। इस फ्लास्क को लगभग आधा पानी से भरकर जार में नमक मिले हुए पानी की सहायता से उबालते हैं। इसे थोड़ी देर तक उबलने देंगे जिससे फ्लास्क के अंदर की हवा पानी की वाष्प द्वारा बाहर धकेल दी जाए। अब फ्लास्क को जार के पानी से बाहर निकाल देंगे, जब पानी उबलना बंद हो जाए तो फ्लास्क को ढक्कन से कस कर बंद कर देंगे। अब इस फ्लास्क को उलटा कर देंगे जैसा कि चित्र 3 में दिखाया गया है। अगर फ्लास्क के पेंदे पर उबलता हुआ पानी उड़ेला जाए तो भी फ्लास्क के अंदर पानी नहीं उबलता है।

अगर फ्लास्क के पेंदे पर ठण्डा पानी उड़ेलते हैं तो हम देखते हैं कि फ्लास्क के अंदर पानी उबलने लग जाता है जबकि फ्लास्क का पेंदा बहुत गर्म नहीं होता है। फ्लास्क के पेंदे पर ठण्डा पानी उड़ेलने से फ्लास्क में उपस्थित वाष्प का तापमान कम हो जाने के कारण वाष्प का संघनन हो जाता है जिससे पानी पर दाब में कमी हो जाती है। हम जानते हैं कि दाब कम होने पर पानी कम तापमान पर भी उबलने लगता है इसलिए अब फ्लास्क में पानी उबलने लगता है। इस तरह हम देखते हैं कि ठण्डे पानी की सहायता से पानी को उबालना संभव है जो कि उबलते हुए पानी से संभव नहीं है। हमें यह प्रयोग करते समय सावधानी रखनी चाहिए। फ्लास्क के बाहर और अंदर के दाब में अंतर के कारण फ्लास्क टूट भी सकता है जिससे दुर्घटना घट सकती है।

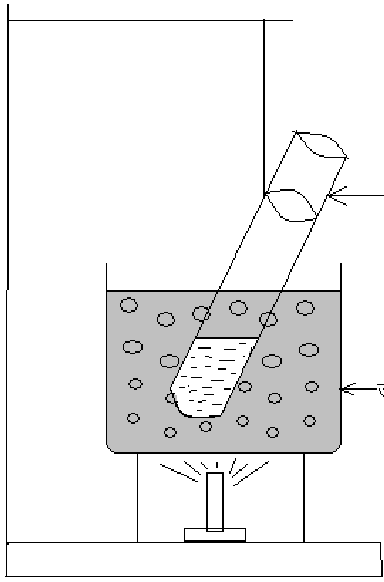

चित्र 2 उबलते हुए पानी द्वारा पानी को उबालना

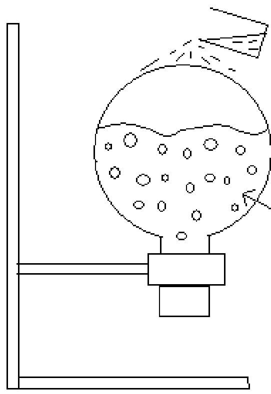

चित्र 3 ठण्डे पानी से उबलता हुआ पानी

<u>उबलता हुआ पानी गर्म होता है या ठण्डा ?</u>

हमारा सामान्य अनुभव है कि उबलता हुआ पानी इतना गर्म होता है कि उसे हाथ से स्पर्श नहीं किया जा सकता है। क्या उबलता हुआ पानी हमेशा 100°C पर होता है अथवा इसका तापमान इससे कम या अधिक भी हो सकता है? हमने यह सुना है कि ऊंचाई के स्थान जैसे पहाड़ों पर खाना पकाने में कठिनाई होती है। जैसे-जैसे हम पृथ्वी की सतह से ऊंचाई की ओर जाते हैं तो वायुमण्डल का दाब कम होता जाता है। दाब कम हो जाने से पानी के अणुओं को वाष्प में परिवर्तित होने के लिए कम ऊर्जा की आवश्यकता होती है, इसलिए ऊंचाई के स्थानों जैसे पहाड़ों पर पानी कम तापमान पर उबलने लग जाता है जिसके फलस्वरूप ऊंचाई पर पानी के उबलने पर भी खाना ठीक से नहीं पक पाता है। पृथ्वी की सतह से प्रति किलोमिटर ऊंचाई पर पानी के उबाल बिंदु में 3°C की कमी आ जाती है। पृथ्वी से 11 किलोमीटर की ऊंचाई पर पानी का उबाल बिंदु 66°C ही रह जाता है, इस ऊंचाई पर वायुमण्डल का दाब सतह के दाब का एक चौथाई ही रह जाता है। इसे चित्र 4 द्वारा ग्राफ़ में भी दिखाया गया है। मंगल ग्रह पर वायुमण्डलीय दाब पृथ्वी की सतह पर वायुमण्डलीय दाब की तुलना में बहुत कम है, इसलिए मंगल की सतह पर उबलता हुआ पानी इतना ठण्डा होता है कि हम उसे आराम से पी सकते हैं।

हम सब जानते हैं कि प्रेशर कुकर में खाना बहुत कम समय में ही पक जाता है। प्रेशर कुकर में पानी पर वाष्प का दाब वायुमण्डलीय दाब से अधिक होता है, जिससे पानी का उबाल बिंदु 100°C से अधिक हो जाता है। उबलते हुए पानी के उच्च तापमान के कारण प्रेशर कुकर में खाना जल्दी पक जाता है। इस उच्च तापमान के कारण प्रेशर कुकर में खाने के आवश्यक पोषक तत्वों के नष्ट होने की संभावना भी होती है। जैसे -जैसे हम पृथ्वी की सतह से गहराई में जाएंगे, वायुमण्डलीय दाब बढ़ने के कारण पानी का उबाल बिंदु भी बढ़ जाता है। पृथ्वी की सतह से 600 मीटर की गहराई पर पानी 102°C पर उबलता है। अगर किसी बॉयलर में वाष्प दाब, वायुमण्डलीय दाब का 14 गुना कर दिया जाए तो पानी 200°C पर उबलेगा। दूसरी ओर एक निर्वात पंप से जुड़े हुए जार मे पानी 20°C पर भी उबल सकता है।

<u>क्या बर्फ भी गर्म हो सकती है ?</u>

बर्फ का नाम सुनते ही हमें तुरन्त ठण्ड की अनुभूति होने लगती है, लेकिन बर्फ गर्म भी हो सकती है। क्या ऐसा संभव है ? हमने हमेशा ऐसा ही सुना है कि बर्फ का तापमान 0°C से कम होता है, लेकिन भौतिक विज्ञानी ब्रिजमैन के अनुसार ऐसा सही नहीं है। बहुत उच्च दाब पर पानी को ठोस अवस्था में परिवर्तित किया जा सकता है तथा 0°C से काफ़ी अधिक तापमान पर भी वह ठोस अवस्था में ही कायम रह सकता है। लेकिन यह बर्फ सामान्य बर्फ से भिन्न होती है अर्थात् ब्रिजमैन के अनुसार बर्फ के अनेक रुप हो सकते हैं।

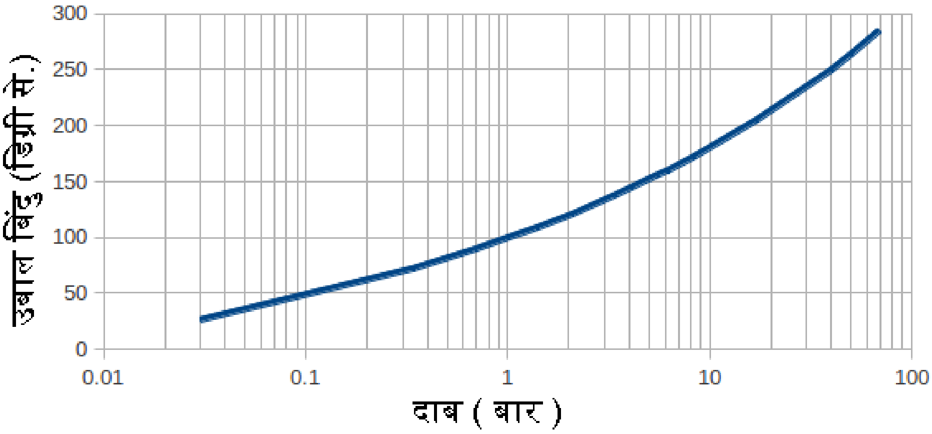

ब्रिजमैन ने 20600 वायुमण्डलीय दाब और 76°C के तापमान पर गर्म बर्फ का निर्माण करके दिखाया। ब्रिजमैन ने इसे बर्फ संख्या 5 नाम दिया। अगर इस बर्फ को हम छू लें तो हमारी अंगुलियां जल सकती हैं, लेकिन इस बर्फ को हम छू नहीं सकते, क्योंकि जिस पात्र में इस बर्फ का निर्माण किया जाता है उस पात्र की दीवारें अत्यधिक मोटी बनाई जाती है जिससे वे गर्म बर्फ के निर्माण के लिए आवश्यक दाब को सहन कर सकें। इसलिए इस बर्फ को देखना भी संभव नहीं है। यह बर्फ सामान्य बर्फ एवं पानी से भारी होती है, इसलिए पानी में छोड़ने पर यह बर्फ डूब जाएगी, जबकि सामान्य बर्फ पानी में तैरती है। इस बर्फ का विशिष्ट घनत्व 1.05 होता है।

कोयले से ठण्डक !

हम सभी जानते हैं कि कोयले को जलाकर गर्मी पैदा की जाती है, लेकिन कोयले का उपयोग ठण्डक पैदा करने के लिए भी किया जाता है। हमने सूखी बर्फ (dry ice) के बारे में भी सुना है, कोयले का उपयोग सूखी बर्फ बनाने में किया जाता है। सूखी बर्फ बनाने के लिए कोयले को ड्रमों में जलाया जाता है, इस प्रक्रिया में कार्बन डाइ-ऑक्साइड गैस का निर्माण होता है जिसे एक क्षारीय घोल में अवशोषित कर दिया जाता है। इस घोल को गर्म करके शुद्ध कार्बन डाइ-ऑक्साइड गैस को पृथक कर दिया जाता है। इस गैस को ठण्डा करके अत्यधिक दाब पर संपीड़ित करके इसका 70 वायुमण्डलीय दाब पर द्रवीकरण किया जाता है। इस तरल कार्बन डाइ-ऑक्साईड को मोटी दीवार वाले सिलेंडरों में भर कर कारखानों में भेजा जाता है जहां पर इसे ठण्डे पेय बनाने के लिए उपयोग किया जाता है। यह तरल कार्बन डाइ-ऑक्साइड इतनी ठण्डी होती है कि इससे धरती भी ठण्डी होकर जम जाती है, इसलिए इसका उपयोग मॉस्को में भूमिगत रेलवे के निर्माण में भी किया गया था। लेकिन हमें कई बार ठोस कार्बन डाइ-ऑक्साइड की भी आवश्यकता होती है जिसे सूखी बर्फ (DRY ICE) के नाम से जानते हैं।

तरल कार्बन डाइ-ऑक्साइड का कम दाब पर जब तीव्र वाष्पीकरण किया जाता है तो पात्र में बची हुई कार्बन डाइ-ऑक्साइड का तापमान तेजी से कम होने कारण वह ठोस कार्बन डाइ-ऑक्साइड के कणों के रूप में परिवर्तित हो जाती है। इस कार्बन डाइ-ऑक्साइड को दबा कर इसको ठोस ब्लॉक्स का आकार दे दिया जाता है जिसे बाजार में सूखी बर्फ के नाम से बेचा जाता है। यह सूखी बर्फ पानी की सामान्य बर्फ से भारी होती है इसलिए पानी में यह डूब जाती है। सूखी बर्फ का तापमान -78.5°C होता है, फिर भी हाथ में हम इसे सावधानी से पकड़े तो हमें यह इतनी ठण्डी महसूस नहीं होती है। क्योंकि जैसे ही यह हमारी त्वचा के संपर्क में आती है इसका कुछ भाग वाष्पीकरण के कारण गैस में बदल जाता है, यह गैस हमारी त्वचा को अतिशीत तापमान से बचा देती है। वायुमण्डलीय दाब पर सूखी बर्फ -78.5°C तापमान पर सीधे वाष्प में परिवर्तित हो जाती है इस प्रक्रिया को उर्ध्वपातन (sublimation) कहा जाता है। सूखी बर्फ के उर्ध्वपातन की ऊष्मा 571 किलो जूल प्रति किलोग्राम होती है। सूखी बर्फ पानी की साधारण बर्फ से बहुत ठण्डी होती है तथा अपनी अवस्था परिवर्तन के कारण कोई अवशेष नहीं छोड़ती है, इसलिए यह एक बहुत सुविधायुक्त, प्रभावी एवं स्वच्छ शीतलक है। सूखी बर्फ के इन गुणों के कारण उद्योगों में इसका प्रचुरता से उपयोग किया जाता है।

सूखी बर्फ का खाद्य संरक्षण में उपयोग काफ़ी सामान्य है। जमे हुए खाद्य पदार्थों के परिवहन के लिए इसका उपयोग आसानी से किया जा सकता हैं क्योंकि इसके उपयोग से यांत्रिक शीतलक की आवश्यकता नहीं होती है। सूखी बर्फ के उपयोग से खाद्य पदार्थों में नमी भी नहीं आती है तथा इसके उपयोग से बनी कार्बन डाइ-ऑक्साइड जीवाणुओं को पनपने से भी रोकती है। सूखी बर्फ को पानी में रखने पर इसके उर्ध्वपातन की प्रक्रिया में तेजी आ जाती है जिससे धुँए के घने बादलों का निर्माण हो जाता है। इस प्रक्रिया का उपयोग रंगमंचों, रात्रि क्लबों इत्यादि स्थानों पर नाटकीय प्रभावों के निर्माण के लिए भी किया जाता है। आग बुझाने के लिए सूखी बर्फ का उपयोग बहुत प्रभावी होता है क्योंकि आग के चारों ओर कार्बन डाइ-ऑक्साइड गैस के

आवरण के निर्माण के कारण ऑक्सीजन की आपूर्ति रुक जाती है साथ ही वाष्पीकरण की प्रक्रिया में काफ़ी मात्रा में ऊष्मा का भी अवशोषण हो जाता है। इन कारणों से आग लगने की प्रक्रिया अवरूद्ध हो जाती है।

कानों से ताप नियंत्रण !

हम सभी जानते हैं कि कान से हम सुनते हैं लेकिन हाथी के कान सुनने के अतिरिक्त ताप नियंत्रण का काम भी करते हैं। हाथी के कान त्वचा की पतली फैली हुई परत से बने होते हैं जिसमें रक्त वाहिकाओं का घना जाल होता है। गर्मी के दिनों में हाथी अपने बड़े-बड़े कानों को लगातार फड़फड़ाते हैं जिससे उनके आस-पास हवा का संचरण होने लगता है। यह हवा हाथी के कानों में फैली रक्त वाहिकाओं को ठण्डा करती है और यह ठण्डा रक्त हाथी के शरीर में संचरित होता है। हाथी के कानों की रक्त वाहिकाओं में प्रवेश करते हुए रक्त के तापमान में वापस उसके शरीर में लौटने से पहले 6°C तक की कमी हो सकती है। इस तरह हाथी के कान ऊष्मा विनिमयक का कार्य करते हैं। अफ्रीकन एवं एशियन हाथी के कानों के आकार में अंतर भी हम इस आधार पर स्पष्ट कर सकते हैं। अफ्रीकन भूमध्य रेखा के समीप होने के कारण अपेक्षाकृत गर्म जलवायु में रहते हैं, इसलिए उनके कानों का आकार बड़ा होता है। एशियन उत्तर की ओर रहने के कारण थोड़े ठण्डे वातावरण में रहते हैं, इसलिए एशियन हाथियों के कान छोटे होते हैं। चित्र-5 में हम एशियन और अफ्रीकन हाथी के कानों में अंतर देख सकते हैं।

एशियन हाथी

अफ्रीकन हाथी

चित्र - 5 एशियन एवं अफ्रीकन हाथी के कानों में अंतर

संदर्भ सूची

1. मार्क्स जोंस, जी. जोंस, फिलिप मार्चींगटन, कोर्डीनेटेड साइन्स-फ़िज़िक्स, द्वितीय संस्करण, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999
2. वर्ल्ड बुक एनसाइक्लोपीडिया ऑफ साइन्स-फ़िज़िक्स, वर्ल्ड बुक, शिकागो, 2001
3. न्यू बुक ऑफ पॉपुलर साइंस, वोल्यूम-3, ग्रोलियर 2004
4. वाय पेरेलमैन, फ़िज़िक्स कैन बी फन, न्यू सेंचुरी बुक हाऊस प्रा. लि. 2009

वो गाँव मेरा जब याद आया

✍ अमर ज्योति
प्रशासनिक सहायक .का) एवं सा(.प्र .

आज सुबह जब नींद खुली
एक गुजरा ज़माना याद आया,
पल भर में मिटी सारी अंगड़ाई
वो गाँव मेरा जब याद आया।

मैं डूब गया उन यादों में
कुछ दोस्त पुराने याद आये,
पर भीग गयी मेरी पलकें,
वो बाग मेरा जब याद आया।

बदरंग नहीं थी शाम वहाँ
एक महफ़िल थी चौपालों पर,
हर सुबह निखर कर आती थी,
हर पल मेरी याद में वह आया।

वहाँ जीवन था एक सपने-सा
और हर त्यौहार की खुशियाँ भी,
रुक कर मै बस वहीं खोता गया
जब होली का रंग याद आया।

कुछ रौशन राहें वही रहीं
पर मैं ना रहा उन गलियों में,
इस याद ने बोझिल कर डाला
वो गाँव मेरा जब याद आया।

आओ ऐसा जहाँ बनाएं

अश्वनी कुमार, वैज्ञा./ अभि.-एसडी

आओ ऐसा जहाँ बनायें
बैर द्वेष मिल दूर भगाएं -
तय कर रहे ग्रहों की दूरी
आपस की दूरियां मिटाएँ ||1||

देखो धरती माँ का आँचल
क्षीण हो रहा है अब प्रतिपल
डसे प्रदूषण हमको हरपल
करे न देरी आगे आयें
आओ मिल कर पेड़ लगायें ||2||

देख रहे हम नया ज़माना
बदल रहा सब ताना बाना
रंगे हुए पश्चिमी रंग में
भूल न जाएँ असली जामा
अपनी संस्कृति को अपनाएं
दुनिया में पहचान बनायें ||3||

मानव जीवन हमने पाया
करें वक्त हम यूँ न जाया
मानवता की राह चले हम
ज्ञानदीप से हर लेवें तम
आओ ऐसा दिया जलाएं ||4||

देखो युग वैज्ञानिक आया
नशा प्रगति का हम पर छाया
इस विकास की अंध दौड़ में
क्या कुछ खोकर क्या है पाया ?
आओ इसका पता लगाएं ||5||

देख प्रकृति की छटा निराली
पशु पक्षी फूलों की डाली
नदियां पर्वत और हरियाली
नष्ट करें ना इन्हें बचाएँ ,
जीवन को खुशहाल बनायें ||6||

नव पीढ़ी का सृजन करे हम
रहे बाजुओं में इतना दम
सच का दामन कभी ना छूटे
और बुराई दूर भगाएं
यही मंत्र हर घर फैलाएं ||7||

इसरो के वैज्ञानिक हम सब
मानवता हित जीवन अर्पित
काश करें ऐसा अन्वेषण
लोगों की संवेदना जगाएं || 8||

कीमती चीजें

जसोता सुहंदा
वरि. सहायक, ईएनटीएसजी/ईएसएसए

सबसे बड़ा धन	-	ज्ञान धन
सबसे कीमती वचन	-	गुरु का वचन
पहला साक्षी	-	अंतःकरण
कीमती राख	-	सुनार की राख
गंवाने की चीज	-	अपना अहंकार
इकट्ठी करने की चीज	-	गुरु का ज्ञान
हर पल याद करने की बात	-	भगवान का धन्यवाद
सबसे कीमती धातु	-	प्लेटिनम
सबसे अच्छी मिठास	-	मधुर वाणी
सच्चा मित्र	-	सत्गुरु

तीन प्रकार के गुरु - (1) ब्रह्म नेष्ठी (2) ब्रह्म श्रोत्री (3) ब्रह्म नेष्ठी और ब्रह्म श्रोत्री

कम्प्यूटर पर शब्द संसाधन : भारतीय भाषा संदर्भ

सोनू जैन, हिंदी कक्ष, अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, इसरो

सार

इक्कीसवीं सदी में सूचना प्रौद्योगिकी सबसे बड़ी शक्ति के रुप में उभर कर सामने आयी है। जिसके पास जितनी प्रमाणिक और अद्यतन सूचना है आज के युग में वही पूज्य और शक्तिशाली है। निश्चित रुप से यह बात उन साधनों पर भी लागू होती है, जो आधुनिक युग में सूचना के संवाहक और अभिरक्षक हैं। आधुनिक युग में सूचना क्रांति कंप्यूटर केन्द्रित है। यही सूचना का सशक्त अभिरक्षक, संवाहक और स्रोत का सबसे सशक्त साधन के रुप में हमारे सामने है, इसीलिए कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी और कंप्यूटर को प्रायः एक-दूसरे का पर्याय समझा जाता है। भारत एक विशाल बहुभाषी देश है राजभाषा हिंदी सहित 22 भाषाओं को संविधान में मान्यता प्रदान की गई है। इनमें से अधिकांश भाषाओं की लिपियां भी प्रायः अलग-अलग हैं। देशभर में व्यापार और विकास की प्रगति होने के कारण व्यक्तियों के लिए एक से अधिक भाषाओं में संपर्क करना आवश्यक हो गया है। यहाँ यदि आप कुछ नई चीज़ सीखना चाहें तो पहले आपको अंग्रेजी सीखने की आवश्यकता पड़ेगी। यदि हमारे देश के आम आदमी को कंप्यूटर में उनकी ज़रूरत के मुताबिक दक्षता हासिल करनी है तो सूचना प्रौद्योगिकी का प्रसार हिंदी और अन्य भाषाओं में होना ज़रूरी है। इससे एक तो लोगों को अंग्रेज़ी में दक्ष होने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी दूसरे यह भारतीय भाषाओं के साहित्यिक एवं रचनात्मक विकास में भी सहायक होगी।

भाषा

भाषा मानव जीवन तथा समाज का अभिन्न अंग है। इसके द्वारा न केवल विचारों, सूचनाओं तथा भावों का संप्रेषण होता है, अपितु तथ्यों के आकलन, चिंतन एवं समस्त व्यवहार का आधार भी भाषा है। रोमन यॉकोब्सन के अनुसार भाषा संप्रेषण का माध्यम है और यह संप्रेषण वक्ता और श्रोता के बीच में होता है। संदर्भ (CONTEXT) → वक्ता (ADDRESSER) → संदेश(MESSAGE) → श्रोता (ADDRESSEE) → संपर्क (CONTACT) → भाषा तंत्र (CODE) से समझा जा सकता है कि वक्ता यानी बोलने वाला व्यक्ति जब किसी व्यक्ति से बात करता है, अर्थात श्रोता को संदेश प्रेषित करता है तो यह संदेश किसी भाषा-तंत्र (CODE) के माध्यम से दिया जाता है। प्रत्येक संदेश किसी-न-किसी "परिप्रेक्ष्य" में दिया जा सकता है। और यह भी कि यह संदेश किसी संपर्क या संदर्भ के द्वारा दिया जाता है। सूचना स्रोत से निकल कर लक्ष्य तक पहुचँने के लिए जिस माध्यम पर सवार होती है वही भाषा है।

कंप्यूटर

यह तो सर्वविदित है, कि कंप्यूटर एक मशीन है। किसी भी मशीन का निर्माण किसी विशिष्ट प्रयोजन से होता है, और उस मशीन की अपेक्षाओं के अनुसार उससे काम लिया जाता है। मानव और मशीन के बीच संबंध काफी पुराना है। वर्तमान में मानव पैन्ट के चैन से लेकर पेन की नोंक तक के निर्माण में मशीन का उपयोग करते हैं। कंप्यूटर मशीन में स्वचालित कंप्यूटर के निर्माण के बाद में कृत्रिम बुद्धि) ARTIFICIAL INTELLIGENCE) के चिप लगाए जाते हैं और उसे कंप्यूटर की भाषा में प्रोग्राम अर्थात क्रमानुदेश दिए जाते हैं।

कम्प्यूटर और भाषा का सह संबंध

कंप्यूटर वस्तुत: न तो अंग्रेजी समझता है, न ही हिन्दी या अन्य कोई भाषा। उसकी अपनी भाषा होती है। यह द्विआधारी अंको (Binary) अर्थात 0 से 1 अंको पर कार्य करता है। भले ही हम कंप्यूटर का किसी भी काम के लिए प्रयोग करें, उदाहरणार्थ लेखन कार्य के लिए, ध्वनि रिकॉर्डिंग के लिए या फिर वीडियो प्रोसेसिंग के लिए, हमें इसके लिए कंप्यूटर को या तो कुछ सूचनाएं प्रदान करनी पड़ती हैं (जैसे टाइपिंग के माध्यम से या रिकॉर्डिंग के जरिए) या फिर हम कुछ सूचनाएं कंप्यूटर से ग्रहण करते हैं (उदाहरण के लिए पहले से रिकार्डेड वीडियो को देखना या पहले से मौजूद फाइलों को खोलना)। इन्हें क्रमश: इनपुट और आउटपुट के रूप में जाना जाता है। इन दोनों प्रक्रियाओं में जिन सूचनाओं (डेटा) का प्रयोग होता है उसे कंप्यूटर पर अंकों के रूप में स्टोर किया जाता है क्योंकि वह सिर्फ अंकों की भाषा जानता है, और वह भी सिर्फ दो अंकों - '0' तथा '1' की भाषा। इन दो अंकों का भिन्न-भिन्न ढंग से पारस्परिक बाइनरी संयोजन कर अलग-अलग डेटा को कंप्यूटर पर रखा जा सकता है। मिसाल के तौर पर 01000001 का अर्थ है अंग्रेजी का कैपिटल A अक्षर और 00110001 से

तात्पर्य है 1 का अंक। पास्कल, कोबॉल आदि कंप्यूटर भाषाएँ हैं। इन भाषाओं के माध्यम से ही कंप्यूटर प्रोग्राम तैयार किये जाते हैं। इस प्रकार कंप्यूटर भाषा की दृष्टि से स्वतंत्र है।

भाषा संसाधन का अचूक उपायः एनकोडिंग प्रणाली

अक्षरों या पाठ्य सामग्री और कंप्यूटर पर स्टोर किए जाने वाले बाइनरी डिजिट्स के बीच तालमेल बिठाने वाली प्रणाली को एनकोडिंग कहते हैं। एनकोडिंग टेबल के माध्यम से कंप्यूटर यह तय करता है कि फलां बाइनरी कोड को फलां अक्षर या अंक के रूप में स्क्रीन पर प्रदर्शित किया जाए। किस एनकोडिंग में कितने बाइनरी अंक प्रयुक्त होते हैं, इसी पर उसकी क्षमता और नामकरण निर्भर होते हैं। उदाहरण के तौर पर अब तक लोकप्रिय एस्की एनकोडिंग को 7 बिट एनकोडिंग कहा जाता है क्योंकि इसमें हर संकेत या सूचना के भंडारण के लिए ऐसे सात बाइनरी डिजिट्स का प्रयोग होता है। एस्की एनकोडिंग के तहत इस तरह के 128 अलग-अलग संयोजन संभव हैं यानी इस एनकोडिंग का प्रयोग करने वाला कम्प्यूटर 128 अलग-अलग अक्षरों या संकेतों को समझ सकता है। अब तक कंप्यूटर इसी सीमा में बंधे हुए थे और इसीलिए भाषाओं के प्रयोग के लिए उन भाषाओं के फ़ॉन्ट पर सीमित थे जो इन संकेतों को कंप्यूटर स्क्रीन पर अलग-अलग ढंग से प्रदर्शित करते हैं। यदि अंग्रेजी का फ़ॉन्ट इस्तेमाल करें तो 01000001 संकेत को A अक्षर के रूप में दिखाया जाएगा। लेकिन यदि हिंदी फ़ॉन्ट का प्रयोग करें तो यही संकेत ग, च या किसी और अक्षर के रूप में प्रदर्शित किया जाएगा।

एनकोडिंग प्रणालीः यूनिकोड

यूनिकोड एक 16 बिट की एनकोडिंग व्यवस्था है, यानी इसमें हर संकेत को संग्रह और अभिव्यक्त करने के लिए सोलह बाइनरी डिजिट्स का इस्तेमाल होता है। इसीलिए इसमें 65536 अद्‌वितीय संयोजन संभव हैं। इसी वजह से यूनिकोड हमारे कंप्यूटर में सहेजे गए डेटा को फ़ॉन्ट की सीमाओं से बाहर निकाल देता है। इस एनकोडिंग में किसी भी अक्षर, अंक या संकेत को सोलह अंकों के अद्‌वितीय संयोजन के रूप में सहेज कर रखा जा सकता है। चूंकि किसी एक भाषा में इतने सारे अद्‌वितीय अक्षर मौजूद नहीं हैं इसलिए इस स्टैंडर्ड (मानक) में विश्व की लगभग सारी भाषाओं को शामिल कर लिया गया है। हर भाषा को इन 65536 संयोजनों में से उसकी वर्णमाला संबंधी आवश्यकताओं के अनुसार स्थान दिया गया है। इस व्यवस्था में सभी भाषाएं समान दर्जा रखती हैं और सहजीवी हैं। यानी यूनिकोड आधारित कम्प्यूटर पहले से ही विश्व की हर भाषा से परिचित है (बशर्ते ऑपरेटिंग सिस्टम में इसकी क्षमता हो)। भले ही वह हिंदी हो या पंजाबी, या फिर उड़िया। इतना ही नहीं, वह उन प्राचीन भाषाओं से भी परिचित है जो अब बोलचाल में इस्तेमाल नहीं होतीं, जैसे कि पाली या प्राकृत। और उन भाषाओं से भी जो संकेतों के रूप में प्रयुक्त होती हैं, जैसे कि गणितीय या वैज्ञानिक संकेत। यूनिकोड को व्यापक रूप से विश्वव्यापी सूचना आदान-प्रदान के मानक के रूप में स्वीकार किया जा रहा है क्योंकि बड़ी आई टी कंपनियों ने इसके लिए अपने समर्थन की घोषणा की है।

यूनिकोड के लाभ

1. एकरूपता
2. कार्यालय के सभी कार्य कंप्यूटर पर हिंदी में आसानी से होते हैं जैसे – वर्ड प्रोसेसिंग, डाटा प्रोसेसिंग, ई-मेल, वैबसाइट निर्माण आदि।
3. हिंदी में बनी फाइलों का आसानी से आदान-प्रदान कर सकते हैं।
4. हिंदी की-वर्ड पर गूगल या किसी अन्य सर्च इंजिन में सर्च कर सकते हैं।
5. उपलब्ध की-बोर्ड ले-आउट विकल्प

    इंस्क्रिप्ट (standardized by DOE in 1986)
    रेमिंग्टन
    फोनेटिक >> विजुअल फोनेटिक ले-आउट

यूनिकोड सक्रिय करने का विधिः

विभिन्न प्रकार के ऑपरेटिंग सिस्टम्स में यूनिकोड निम्नानुसार विधि से सक्रिय किया जा सकता हैः-

विंडोज एक्सपी में Start>Control Panel>Date, Time, Language and Regional Options>Regional & Language Options>Languages Tab पर जाएं और अब Install files for complex scripts... पर क्लिक करने के

बाद Apply दबाएं। 2. अब खुलने वाले डायलॉग बॉक्स में दिखाया जाएगा कि आप अपने कंप्यूटर में इन्डिक और कुछ दूसरी भाषाओं की फाइलें कॉपी करने जा रहे हैं। इस पर OK करें। 3. इस पर आपसे इन्स्टॉलेशन सीडी मांगी जाएगी। इसके बाद कंप्यूटर सीडी से कुछ फाइलों को कॉपी करेगा। 4. यह प्रोसेस पूरा होने पर इसी टैब में ऊपर दिया Details बटन दबाएं और Add बटन पर क्लिक करें। अब खुलने वाले छोटे डायलॉग बॉक्स में अलग-अलग स्क्रिप्ट्स की लिस्ट होगी, जिसमें हिंदी को चुनें। अब OK बटन दबाकर Regional & Language Options वाला डायलॉग बॉक्स बंद करें। विंडोज टास्क बार पर EN और HI वाला ऑप्शन दिखाई देने लगेगा। यानी हिंदी यूनिकोड समर्थन सक्रिय हो चुका है। अगर लैंग्वेज बार दिखाई न दे तो Start>Control Panel>Date, Time, Language and Regional Options>Regional & Language Options>Languages Tab> Details पर जाएं और Language Bar... बटन पर क्लिक करें। यहां दिखने वाले Show the Language bar on the desktop ऑप्शन के सामने बॉक्स पर टिक कर OK करें और फिर से OK दबाकर डायलॉग बॉक्स बंद करें। लैंग्वेज बार दिखने लगेगा। विंडोज सर्वर 2003 इसमें लगभग विंडोज एक्सपी की ही तर्ज पर हिंदी समर्थन सक्रिय होता है।

विंडोज विस्टा और विंडोज 7 इन ऑपरेटिंग सिस्टम्स में उक्त फाइलें पहले से ही मौजूद हैं इसलिए हिंदी को सक्रिय करते समय सीडी की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए Start>Control Panel>Clock, Language and Region> Region and Language पर क्लिक कर Region And Language डायलॉग बॉक्स खोलें। अब Keyboards and Languages टैब पर क्लिक करें और फिर Change Keyboards... दबाएं। अब दिखने वाले डायलॉग बॉक्स में Add बटन दबाएं जिससे भाषाओं की लिस्ट दिखाई देने लगेगी। यहां Hindi (India) को चुनें और फिर वहीं दिए + के निशान पर क्लिक कर Devnagari-Inscript की-बोर्ड को चुनें। भारत का मानक की-बोर्ड इनस्क्रिप्ट है। बस OK बटन दबाएं और लैंग्वेज बार में हिंदी हाजिर है। यूनिकोड enable करने की प्रक्रिया आप राजभाषा विभाग की साइट http://rajbhasha.nic.in से ई-उपकरण पर क्लिक करके ले सकते हैं।

इंस्क्रिप्ट कीबोर्ड- लेआउट-

INSCRIPT टाइपिंग सीखने के लिए – www.ildc.in साइट से हिन्दी एवं अंग्रेजी के लिए आसान टंकण प्रशिक्षक डाउनलोड करके एक घंटा प्रतिदिन 8-10 दिनों में INSCRIPT टाइपिंग सीखी जा सकती है। इसके अलावा बालेंदु दधीचि द्वारा विकसित स्पर्श नामक सॉफ्टवेयर भी मनोरंजक ढंग से हिंदी टंकण सीखने में सहायक सिद्ध हुआ है।

निष्कर्षः

कंप्यूटर अब अंग्रेजी का मोहताज नहीं रहा और इसीलिए यूनिकोड ने उसकी सम्पूर्ण कार्यप्रणाली भी बदल दी है। डेटा के भंडारण के साथ-साथ उसकी प्रोसेसिंग और प्रस्तुति के तरीके भी बदल गए हैं। चूंकि यूनिकोड सोलह बिट की एनकोडिंग व्यवस्था होने के कारण अधिकांश भारतीय भाषाओं में कार्य करने की सुविधा प्रदान करती है, साथ ही विश्व के अधिकांश सॉफ्टवेयर पुरानी एनकोडिंग व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए विकसित किए गए थे इसलिए ऐसे सॉफ्टवेयर यूनिकोड टेक्स्ट को समझ नहीं पाते। नतीजतन विश्व भर में सॉफ्टवेयरों को यूनिकोड समर्थन युक्त बनाने की प्रक्रिया चल रही है। किसी कंप्यूटर पर यूनिकोड का पूरा लाभ लेने के लिए न्यूनतम आवश्यकता है ताजातरीन विन्डोज, लिनक्स या मैक ऑपरेटिंग सिस्टम का प्रयोग। चूंकि इन ऑपरेटिंग सिस्टम्स के संसाधनों की अपनी जरूरतें हैं इसलिए इस बात की काफी संभावना है कि संबंधित कम्प्यूटर कम से कम पी-4, 2 गीगाहर्त्ज श्रेणी का हो और कम से कम 40 जीबी हार्ड डिस्क और 256 एमबी रैम (रैंडम एक्सेस मेमरी) से युक्त हो। इन्हीं कारणों से यूनिकोड की ओर प्रस्थान करने में कुछ आर्थिक बिंदुओं पर विचार करने की आवश्यकता पड़ सकती है।

संदर्भः www.rajbhasha.nic.in, www.sanskrit.jnu.ac.in, www.cse.iitb.ac.in, www.scipub.org, www.indictrans.in, www.cfilt.iitb.ac.in, www.tdil.gov.in, www.cdacmumbai.in, www.iitk.ac.in, www.anglahindi.iitk.ac.in

।। इति।।

मोहरा शतरंज का

जितेन्द्र कुमार
वैज्ञा./अभि., सेडा

शहर की चमक-दमक और चकाचौंध में,
चला जा रहा था, मंजिल की ओर,
आँखों में थी एक हसीं उम्मीद,
दिल में थी हसरत प्रबल।

रंग रहा था वह भी,
सपने हजारों रंग से,
पर दुश्मन भी बैठे थे,
घात लगा के।

गंतव्य ही था, उसका ख्वाब आखिरी,
तभी ठोक दी,
उसके अपनों ने,
ताबूत में कील आखिरी।
चीत्कार उठा अंतर्मन,
करने लगा करूण क्रन्दन,
हृदय पर हुआ घात कठोर,
अपनों ने दिया उसे गर्त में ढकेल।

गर्त ही यादे नियति थी,
तो क्यों लगायें उसे,
आशाओं के पर,
क्यों दिखायें दिवास्वप्न ?

जीवन में आयीं, बाधायें कितनी ही,
तनिक डिगा न सकीं,
कभी उसका कर्तव्य-पथ,
बढ़ता रहा वह निरंतर,
चलता रहा वह निरंतर,
अपने ही रथ पर।

जब दुर्गम थी राह,
और तन हो रहा था मलिन,
तब मन की अद्भुत शक्ति से,
भर रहा था नित नयी उमंग,
अपने दृढ़ विचारों में।

यही प्रेरक संजीवनी,
भरती रही नव प्रेरणा,
देती रही नव चेतना,
थके हुये, जर्जर हुये,
उस निष्ठुर से तन को,
नित करा रही बोध,
उसे उसके गंतव्य को।

नियति के होते, खेल निराले,
हम सब तो हैं चैस-बोर्ड के प्यादे,
जिसकी हर चाल पर नियंत्रण,
महामहिम के इशारे।

कहने को तू सिर्फ कर्ता,
ये महामहिम ही,
तेरे भाग्य-विधाता,
वही देता है, वही लेता है,
वही हसाये, वही रुलाये,
वही तुझे सजाये सँवारे,
वही कराये संहार तेरा।

तू न जाने महिमा उसकी,
भ्रमजाल में तू है फँसा हुआ,
तेरी करनी पर रंग,
उसी का है चढ़ा हुआ,
वह शातिर है,
घात में तेरी बैठा हुआ,
करने को शिकार तेरा,
दिखा चाहे तू,
अजब-अजब सी लीला।

तेरे ही दामन पर पड़ेगें छीटे,
चाहे तू हो कितना ही संजीदा।
अजब है ये दुनिया भी,
जो मोड़ देती,
रूख हवा का भी।
कल तक जो करते तेरा गुणगान,
आज करें वही तुझे बदनाम।

टूटा है आज ख्याल किसी का,
तूलिका भी थी उसकी एक,
सजायी थी भरकर रंग हजार

गुजर जाने के आज,
एक अरसे के भी बाद,
दे जाते हैं याद,
उस कटु अनुभव की ताजा।

उठती है ठीस-अजीब-सी मन में,
जब था वह सकल कर्तव्यनिष्ठ,
तो क्यों बना वह,
मोहरा शतरंज का ?

श्रद्धांजलि

उनको जो लौट कर घर नहीं आए......

(उत्तराखंड प्राकृतिक आपदा)

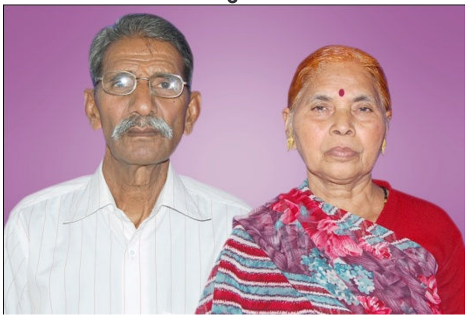

श्रीमती एवं श्री कन्हैयालाल मीणा

उन्हें अभी जाना न था, यह तय था,
फिर भी वह चले गए, सदैव के लिए,
यह एक संजोग ही तो है।

लौटकर बहुत कुछ करना था, यह तय था,
फिर भी वह नहीं लौटे, मुक्त हो जाने के लिए,
यह एक संजोग ही तो है।

समस्त राहें अवरुद्ध थीं, यह तय था,
पर अनंत का मार्ग खुल गया, ना जाने कितनों के लिए,
यह एक संजोग ही तो है।

केदार दर्शन करके लौटना था, यह तय था,
पर वे नहीं लौटे, हम राह देखते रहे उनके पुनः आगमन के लिए,
यह एक संजोग ही तो है।

अंतिम वार्तालाप पर उन्होंने कहा-"वापस लौट रहे हैं, यह तय है"
पर वे नहीं लौटे, देव भूमि में चिर विश्राम करने के लिए,
यह एक संजोग ही तो है।

"बाबू" करता है उन्हें शत-शत नमन,
कदाचित हो गया हो, उनका देवलोक गमन,
"केदार" ने यही तय कर दिया हो उनके लिए,
या फिर यह एक संजोग ही हो।

नियति को कोई टाल नहीं सकता, यह सत्य है,
कहाँ-कब-कैसे, क्या होना है, यह तय है,
यह कोई संजोग नहीं, हकीकत है,
यही एक हकीकत है, यही एक हकीकत है।

यह रचना उन समस्त श्रद्धालुओं को समर्पित है जो उत्तराखंड आपदा में स्थाई रूप से लापता हैं। मेरे माता-पिता केदारनाथ धाम से 16/06/2013 से लापता हैं। तमाम प्रयत्नों के बाद भी उनका कुछ अता-पता नहीं चला। अब मैं भी मानने लगा हूँ कि कदाचित उनका देवलोक गमन दिनांक 16/06/2013 को ही हो गया है। मैं इस रचना के माध्यम से मेरे माता-पिता एवं उनके जैसे समस्त स्थाई लापता श्रद्धालुओं को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

बाबू लाल मीणा
वैज्ञा/अभि-एसई,
जलवायु परीक्षण प्रणाली विभाग,
सैक,इसरो,अहमदाबाद
फोन न. 079-26914610

डायरी के अविस्मरणीय रेखांकित पन्ने
(उत्तराखण्ड आपदा - एक संस्मरण)

बाबू लाल मीणा
वैज्ञानिक/अभियंता-एसई
जलवायु परीक्षण प्रणाली विभाग

4 मई, 2013, सायं 9 बजे, कोटा (गृह निवास) से मेरे बाबूजी (पिताजी) का फोन आया कि मेरी छोटी बहन संतोष के ताऊ ससुर का निधन हो गया है। तुम्हें तीये की बैठक में शामिल होना चाहिए। मैंने उनकी बात पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया था। सोचा था कि यदि समय मिला तो तीये में शामिल हो जाऊंगा। दूसरे दिन संतोष का फोन आ गया। उसने बताया कि उसके ससुर जी गुजर गये हैं। यानि दो भाई एक दिन के अंतराल पर स्वर्ग सिधार गये थे। मुझे अब थोड़ा दुःख हुआ कि एक साथ दो भाई चले गए। मैंने इन्दु (धर्मपत्नी) के साथ सलाह मशविरा करके तीये की बैठक में शामिल होने के लिए 6 मई का टिकट ले लिया और हम दोनों एक सामाजिक परम्परागत दस्तूर में शामिल हो गये। इसके बाद बारहवें में मैं स्वयं चला गया था। मुझे इससे बहुत सुकून मिला, मैंने मन ही मन तय किया कि अब मैं जल्दी-जल्दी घर जाया करूंगा।

मैं अहमदाबाद लौट आया था और नियमित कार्य में लग गया था। कुछ दिन बाद बाबूजी का फोन आया कि वे और माताजी चार धाम यात्रा जाना चाहते हैं। उन्होंने बताया कि वह एक-दो स्थानीय यात्रा आयोजकों से मिल भी चुके हैं। उन्होंने मुझे दो-तीन के फोन नंबर भी दिये और कहा कि मैं उनसे बात करूं और मम्मी-बाबूजी की चार धाम यात्रा प्रायोजित कर दूं। मैंने तब उनसे चार धाम यात्रा के लिए मना कर दिया और कहा कि वे थोड़ा रूक जायें; थोड़े दिन बाद सब परिवार मिल कर पुरी की यात्रा पर जायेंगे। इस पर वे सहमत हो गये। इस विषय पर पहली बार इन्दु भी सहमत थी। इसके बाद एक महीना व्यतीत हो गया।

3 जून, 2013 को फिर से बाबूजी का फोन आया। बोले "मैंने चार धाम यात्रा की बुकिंग कर दी है। 6 जून को कोटा से बस रवाना होगी। हमने सब तैयारी भी कर ली है। इस यात्रा में हमारे कुछ परिचित भी हैं।" यह कहकर वे मेरे उत्तर की प्रतीक्षा करने लगे। इस बार मैं उनको मना नहीं कर सका।

6 जून भी आ गयी। सब तैयारी हो चुकी थी। उनकी चार धाम यात्रा की परम इच्छा पूरी होने जा रही थी। मैं तो उनके लिए कुछ व्यवस्था कर नहीं पाया। उन्होंने स्वयं ही पूरी व्यवस्था कर ली। मेरी बहन संतोष का परिवार कोटा में ही रहता है। चार धाम में जाने से पहले वह हमारे निवास पर आ गयी थी। जैसा अक्सर चार धाम यात्रा जाने वालों के साथ परम्परागत ढंग से होता है; संतोष और उसके परिवार ने दोनों के लिए मालाएं मंगवाई और सकुशल वापसी के वादे के साथ दोनों को विदा किया। मैं इस अवसर पर वहां मौजूद नहीं था। आज मुझे बेहद अफसोस है।

मम्मी-बाबूजी से मैं सिर्फ फोन पर बात कर पाया था। मैंने दोनों को हिदायत दी थी कि दोनों अपने-अपने मोबाईल को अपने पास रखें।

अंतिम विदाई

उन्होंने तब मुझे आश्वस्त किया था कि वे पूरा ध्यान रखेंगे और हर रोज बात कर लिया करेंगे। उनकी यात्रा बस आने में विलम्ब हो रहा था। 3 बजे निकलने वाली बस किन्हीं कारणों से 9 बजे रवाना हुई। 50 तीर्थयात्रियों को भरकर बस नं. आर.जे. 27-पी.बी. 3069 कोटा से चार धाम के लिए निकल चुकी थी।

राजस्थान के मुख्य दर्शनीय स्थानों से गुजरते हुए यह बस 50 यात्रियों के साथ 9 जून को ऋषिकेश पहुँच चुकी थी। अनुभवी यात्री गण बताते हैं कि चार धाम यात्रा बेहद दुर्गम है इसीलिए यह यात्रा पूर्व में बुजुर्ग लोग तब करते थे जब वे अपनी सारी जिम्मेदारियों से मुक्त हो चुके होते थे। चार धाम यात्रा के चार स्तंभ गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ एवं बद्रीनाथ धाम हैं। गंगोत्री एवं बद्रीनाथ की यात्रा सड़क वाहनों के द्वारा संभव हैं जबकि यमुनोत्री एवं केदारनाथ जाने के लिए पैदल या फिर खच्चर और पालकी का सहारा लेना पड़ता है। इन यात्राओं का प्रारंभिक बिन्दु गौरीकुण्ड नामक पौराणिक स्थल है जो ऋषिकेश से लगभग 200 किलोमीटर पर है।

10 जून को 15 यात्रियों का जत्था उत्तराखंड द्वारा निर्धारित यात्रा बसों से गौरीकुण्ड के लिए रवाना हुआ। रास्ता बहुत दुर्गम था और हल्के वाहनों की भीड़ ज्यादा थी। 14 जून तक यह श्रद्धालुगण मात्र गंगोत्री एवं यमुनोत्री की ही यात्रा कर पाये।

इस बीच 13 जून को फोन पर मम्मी से मेरी बात हुई थी। मम्मी ने बताया था कि वे लोग गंगोत्री जा रहे हैं और आगे का मार्ग अवरूद्ध है इसलिए हमें बीच में ही पड़ाव डालना पड़ा है। अपरिहार्य कारणों से उस समय मैं बहुत ज्यादा बात नहीं कर पाया। मम्मी-बाबूजी से मेरा यही अंतिम वार्तालाप था।

गंगोत्री-यमुनोत्री की यात्राएं हो चुकी थीं। अब इन्हें तीसरे चरण केदार नाथ धाम के लिए प्रस्थान करना था। सात-आठ दिन लगातार चलते रहने के कारण सभी यात्री बुरी तरह थक चुके थे। इनकी टोली में अधिकतर यात्री 60 वर्ष से अधिक आयु वाले थे। इनके यात्रा प्रबन्धक को इन लोगों की इस हालत से जरा भी सरोकार नहीं था। वर्षों से वह इसी तरह यात्रा व्यवस्था करता आ रहा था।

15 जून, 2013, प्रातः 10 से 11 बजे, सभी यात्री केदारनाथ धाम के लिए रवाना हुए। कुछ लोग पैदल, कुछ खच्चर पर और कुछ पालकी पर। मम्मी-बाबूजी ने खच्चर कर लिए थे। मौसम बहुत खराब था। निचले इलाकों में गंगा-जमुना का जलस्तर खतरे के निशानों से ऊपर चल रहा था। लगातार बारिश हो रही थी।

समस्त विपरीत परिस्थितियों के बावजूद शाम होते-होते मम्मी-बाबूजी केदारधाम पहुँच चुके थे। मौसम बुरी तरह बिगड़ चुका था। जो लोग 15 जून को केदारनाथ मन्दिर पहुँच चुके थे उन्हें निचले इलाकों की हालत का जरा भी अनुमान नहीं था। साथी-संगी बिछुडे हुए थे। जैसे-तैसे मेरे माता-पिता ने पंक्तिबद्ध होकर केदारनाथजी के दर्शन किए जिसके लिए वे वर्षों से प्रतीक्षा कर रहे थे। दर्शन करने के पश्चात दोनों ने उनकी दोहिती स्वाति (मेरी भांजी) से बातचीत की और यात्रा का ब्यौरा दिया। उन्होंने बताया था कि उनके पूरे कपड़े भीग चुके थे और वहां का मौसम बहुत ठंडा था। उन्होंने यह भी कहा था कि वे गरम कपड़े और एक मोबाईल बस में ही छोड़ आये थे। परिवार के किसी सदस्य के साथ यह उनका अंतिम वार्तालाप था।

इसके बाद बहुत कुछ घटित हो गया। उनका मोबाइल फोन 15 जून रात से बन्द हो गया था। हमारे अनुसार सब कुछ सामान्य चल रहा था। हमें किसी अनहोनी की कल्पना भी नहीं थी। 17 जून सुबह तक हमारे लिए तो सब सामान्य ही था। बस इतना ही कि शायद वे अपना मोबाइल चार्ज नहीं कर पाये होंगे।

17 जून को जब हम लोगों ने ब्रेकिंग न्यूज देखी कि रामबाड़ा और गौरी कुण्ड, बादल फटने से तबाह हो गये हैं तो हमारे पैरों तले जमीन खिसक गयी। मोबाइल संपर्क पूरी तरह टूटा हुआ था। हम ईश्वर से यही प्रार्थना करते रहे कि काश वे केदारनाथ धाम में ही रुके हुए हों। पर 18 जून को जब पता चला कि केदारनाथ

धाम का हाल तो और ज्यादा खराब है तो हमने भाग दौड़ शुरू कर दी। 23 जून को मैं उत्तराखण्ड पहुंच गया। 23 जून से 27 जून तक मैं वहां भटकता रहा पर कुछ नहीं कर पाया। बचाव कार्य शुरू कर दिये गये थे।

27 जून तक उनके जत्थे के 6 लोगों के अलावा सभी को बचा लिया गया था और उन्हें ऋषिकेश ले आये थे। मैं सभी से व्यक्तिगत रूप से मिला, पर किसी ने मुझे यह नहीं बताया कि उनके साथ क्या दुर्घटना हुई है। सिर्फ अन्य 4 लोगों का पता चला कि अब वे नहीं रहे।

उनके सहयात्री मोहनलाल गौड़ ने बताया कि वे एक ही विश्रामालय में 15 जून की रात आसपास ठहरे हुए थे। उनके अनुसार माताजी और साथ वाले ज्यादातर लोगों को बर्फीली सर्दी के कारण डायरिया की शिकायत हो गयी थी। किसी तरह रात बीत चुकी थी। प्रातः मोहन जी के परिवार और मम्मी-बाबूजी की मुलाकात हुई और उन्होंने एक बार फिर से केदारनाथ जी के पवित्र दर्शन किए। दर्शन के बाद दोनों परिवारों ने निश्चय किया कि वे सब साथ में नीचे उतरेंगे यानि गौरीकुण्ड जायेंगे। पर नियति को कुछ और ही मंजूर था। मोहन जी स्वयं के लिए बरसाती कोट की व्यवस्था करने निकले और उनसे कहा कि आप लोग हमारा इंतजार कीजिए, हम 5-10 मिनिट में वापस आते हैं, फिर हम साथ में उतरेंगे। पर मोहन जी के अनुसार उनके वापस आने से पहले ही मेरे माता-पिता वहां से निकल गये। हाँ, बाद में पूछताछ करने पर मंगल सिंह नाम के उनकी टोली के रसोइये ने हमें बताया कि वे लोग उसे मिल गये थे और उसने उन्हें वहां बिठा दिया था जहां से नीचे उतरने के लिए खच्चर मिलते हैं।

इसके बाद उनका किसी से संपर्क नहीं हुआ। हमारे लिए यह एक रहस्य बना हुआ है कि इसके बाद वे कहां गये। उत्तराखण्ड सरकार के अनुसार अब वे स्थाई तौर पर लापता होकर रह गये हैं। मेरे माता-पिता की यह चार धाम यात्रा मैं कभी न भूल पाऊँगा। मेरे जैसे हजारों परिवारों की पीड़ा मैं समझता हूँ। आज भी मैं उनके मोबाइल नंबर +917597747728 को चेक करता हूँ कि शायद घंटी बज जाये।

मैं अब यह मानने लगा हूँ और मेरे दिलो-दिमाग में धीरे-धीरे यह बैठने लगा है कि अब ये कभी न होगा लेकिन पता नहीं क्यों ?

मेरा मन चाहता है, किसी रोज एक फोन आए और उधर से कोई कहे कि - "बाबू" मैं बोल रहा हूँ, मैं और तेरी मम्मी जहाँ भी हैं ठीक हैं। हमारी चिन्ता मत करना, खुश रहना।

कोटा के हमारे स्थायी निवास पर ताला लग गया है। मात्र 10 लोगों के हमारे छोटे से परिवार के दो बुज़ुर्ग समय से पहले चले गये हैं। अब इस खुशहाल परिवार में दो बुज़ुर्ग नहीं रहे।

आज भले ही वे हमारे बीच नहीं हैं किन्तु उनकी अमर स्मृति हमेशा हमारे साथ रहेगी।

***

"हास्य और हवा तंदुरस्ती की दवा"

- जितेंद्र खर्डे

"क्यों हम खुले दिल से ठहाके मार कर हसते नहीं? हास्य एक ऐसी चमत्कारी औषधि है, जिससे हम शारीरिक और मानसिक बीमारियों से दूर रह सकते हैं। परडु विश्वविद्यालय (केलिफोर्निया) के मनोचिकित्सक डॉ. ली बर्ड ने करीब 20 साल तक इस विषय में अनुसंधान करने के बाद अपने शोध-पत्र में लिखा है कि – हास्य एक एरोबिक कसरत के समान है। 30 मिनिट तक की एरोबिक कसरत करने से मिलने वाले सभी लाभ हम 30 मिनिट तक की हास्य कसरत कर के निःशुल्क और बड़ी सहजता से प्राप्त कर सकते हैं। हास्य प्रक्रिया से तन और मन दोनों ही प्रसन्न और तंदुरस्त रहते हैं। नकारात्मक विचारों पर रोक और जीने के प्रति हमारा संपूर्ण रवैया ही बदल जाता है। जीवन में आनंद ही आनंद है, इसकी अनुभूति सिर्फ 30 मिनिट हसने से प्राप्त की जा सकती है। फिर क्यों न हम आज से ही अकेले या समूह में हास्य को अपना गुरुमंत्र बनाएं और जीवन भर तनाव रहित और तंदुरस्त रहे।"

खुलकर या खुले दिल से ठहाके मार कर हसने से हमारा शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है। इस बात के संशोधन का श्रेय अमेरिका की परडु विश्वविद्यालय के डॉ. ली बर्ड और स्टेन्फर्ड विश्वविद्यालय के डॉ. विलियम फ्राय को जाता है। इन दोनों मनोचिकित्सकों ने मिलकर 20 वर्ष तक अपने 1000 से ज्यादा मरीजों को रोज थिएटर में करीब-करीब एक घंटे तक हास्य (COMEDY) फिल्में दिखाकर और कई नामी हास्य कलाकारों के हास्य कार्यक्रम दिखाकर खूब हसाया। इन प्रयोगों के बाद उन्होंने अपने शोधपत्र में हास्य के अनेक सकारात्मक रहस्यों को उजागर किया। खुल कर हसने से हमारे फेफडों में से दूषित हवा ($CO2$) पूरी तरह से निष्कासित हो जाती है। उसकी जगह पर अधिक मात्रा में शुद्ध हवा फेफड़ों में प्रवेश करती है। इसमें 30% से ज्यादा ऑक्सीजन की मात्रा होती है, जिसे हम प्राणवायु भी कहते हैं। क्योंकि वह हमारे शरीर के समस्त कोषों को "प्राण" यानी जीवन से भर देती है। जिससे इन सभी कोषों की कार्यक्षमता, शक्ति और आयु भी बढ़ जाती है। परिणामस्वरूप लंबे समय तक रोगमुक्त और तंदुरस्त रह सकते हैं। इन दोनों मनोचिकित्सकों ने यह भी प्रतिपादित किया कि आप दिन भर में किसी भी कारण से, जाने-अनजाने, सही या कृत्रिम अकेले या समूह में, एक साथ या थोड़े-थोड़े अंतराल के बाद लगभग 30 मिनिट तक खुल कर हसने की कसरत करे तो उससे हमारे शरीर को अनगिनत लाभ मिलता है। जिसका विवरण नीचे संक्षिप्त में दिया गया है।

- • **हृदयरोग और उच्च रक्तदाब में :** अनुवांशिक या किसी अन्य कारणवश, व्यायाम या श्रम के अभाव से या फिर किसी मानसिक तनाव के कारण आने वाले हृदय रोग का नियंत्रण, नकारात्मक विचारों पर रोक और डिप्रेशन की स्थिति को नियंत्रित करने हेतु हास्य कसरत या खुले दिल से हसना बहुत जरूरी है। क्योंकि हसने की प्रक्रिया से बहुत बड़ी मात्रा में ऑक्सीजन हृदय और मस्तिष्क में पहुँचती है जिससे तनाव दूर करने वाले हार्मोन्स (अंडोर्फिन्स) पर्याप्त मात्रा में स्थापित होते हैं। कारणवश हमारा मस्तिष्क शांत हो जाता है। हृदय और मस्तिष्क के स्नायु रिलेक्स हो जाते हैं। इसीके कारण हमारा रक्तदाब भी सामान्य रहता है।

- • **पेट की समस्या में :** जब हम खुले दिल से हसते हैं, तब हमारा पेट भी आगे-पीछे होता है। जिससे कि पेट के आंतरिक अवयव जैसे लिवर, सलीन, किडनी, पेनक्रियास, एड्रिनल ग्लेंड आदि को उपयुक्त व्यायाम मिलता है। उनमें भरपूर मात्रा में रक्त संचार होता है। उनकी कार्यक्षमता भी बढ़ती है। जिससे पेट की छोटी-मोटी समस्याएं दूर हो जाती हैं। इसीलिए हास्य प्रक्रिया को "इंटरनल जोगिंग" भी कहते हैं।

- **छोटी-मोटी शारीरिक पीड़ा में:** हास्य कसरतों के कारण ही पीड़ा दूर करने वाले हार्मोन्स, जिन्हें एंडोर्फिन कहते हैं, अधिक मात्रा में स्थापित होते हैं, जिससे शरीर के छोटे-मोटे दर्द दूर हो जाते हैं।
- **चिंता और डिप्रेशन में :** हास्य के कारण ही मस्तिष्क में सेरोटिनिन नामक रसायन (Fill good chemicals) अधिक मात्रा में स्थापित होते हैं। जिससे मानसिक तनाव कम हो जाता है। अच्छी नींद आती है। नकारात्मक विचारों से भी मुक्ति मिलती है। कुल मिला कर संपूर्ण संवेदन तंत्र अच्छी तरह कार्य करता है।

- **रोग प्रतिकारक शक्ति बढ़ती है:** नियमित रूप से रोजाना 30 मिनिट तक हास्य कसरत करने से शरीर में बड़ी विस्तृत मात्रा में प्राणवायु पहुंचती है। जिससे रक्तकण निर्माण करने वाले अंगों और बोन-मेरो निर्माण की क्षमता भी बढ़ती है। रक्त में हिमोग्लोबिन का स्तर भी बढ़ता (Boost) है। इसी कारण से समस्त शरीर की रोग प्रतिकारक शक्ति बेहतर होती है।

- **मधुमेह में लाभः** बढ़ती उम्र में होने वाले टाइप-2 मधुमेह का मुख्य कारण पेनक्रियास की कमजोरी बताया जाता है। खुले दिल से हसने से पेनक्रियास को भी अधिक मात्रा में शुद्ध प्राणवायु मिलती है। अध्ययन से यह भी पता चला है कि 30 मिनिट तक हसने की प्रक्रिया में 50-60 केलोरी का दहन होता है। परिणामस्वरूप पेनक्रियास की क्षमता में बढ़ोत्तरी होती है और मधुमेह नियंत्रित रहता है।

- **केंसर से सुरक्षाः** जैसे-जैसे हमारे शरीर में प्रदूषित द्रव्यों की मात्रा में वृद्धि होती है, वैसे-वैसे शरीर विभिन्न रोगों का शिकार होने की संभावना बढ़ जाती है। उनमें केंसर जैसे खतरनाक रोग भी शामिल हैं। शुद्ध ऑक्सीजन ही एक उत्तम एन्टीऑक्सिडेन्ट है, जो उन खतरनाक रोगों के मुक्त मुलांकरों (Free Radicals) को अवरोध प्रदान करता है। हास्य प्रक्रिया द्वारा जाने-अनजाने बहुत बड़ी मात्रा में शुद्ध ऑक्सीजन हमारे शरीर में प्रवेश कर जाती है। जिससे बाहर से हवा, पानी और खाद्य पदार्थों द्वारा शरीर में प्रवेशित मुक्त मूलांकुरों का नाश हो जाता है। इस तरह हमें केंसर जैसे खतरनाक रोगों से सुरक्षा मिलती है।

संक्षेप में इतना कह सकते हैं कि रोजाना 20-30 मिनिट तक खुले दिल से ठहाके मार कर हसने से हमारे शरीर में रक्त-संचार सामान्य से 6 से 8 गुना तेज हो जाता है। इससे शरीर के सभी कोष तंदुरस्त होकर अपना कार्य अच्छी तरह से निभाते हैं। जिससे हमारी रोग प्रतिकारक क्षमता और मानसिक शक्ति भी तेज हो जाती है। तन और मन हमेशा तरोताजा होकर किसी भी परिस्थिति में आनंदित रहता है। शायद इसीलिए तो कहा गया है कि - "हास्य और हवा (प्राणवायु) तंदुरस्ती की दवा" ।

चुटकुला -

पतिः कल मेरे सपने में एक बहुत ही सुंदर लड़की आई थी,

पत्नीः वह अकेली ही आई होगी,

पतिः तुम्हे कैसे पता ?

पत्नीः क्योंकि उसका खुबसूरत पति तो मेरे सपने में आया था।

-जितेन्द्र खर्डे
एससीटीडी-एसएनएए
फोन - 2480

'हिंदी से नाता'(हिंदी की ज़ुबानी)

रंजन परनामी

कैसा है यह मुझसे नाता तुम्हारा दोस्तों,
छुड़ाया भी नहीं जाता और निभाया भी नहीं जाता

ईनाम के खातिर लिखते हैं हिंदी माह भर,
पर पूरे साल एक हस्ताक्षर भी हिंदी में बनाया नहीं जाता

मैंने ही आज़ादी में पिरोया पूरे भारत को एक सूत्र में,
पर आज क्यों फिर मुझसे सभी को मिलाया नहीं जाता

कमाते हैं सितारें मेरी ही फिल्मों में काम करके,
पर एक साक्षात्कार पूरे मन से हिंदी में बताया नहीं जाता

ये कैसे पशोपेश में फँसी है आज की पीढी,
अपनी ही राजभाषा को ज्ञान से अपनाया नहीं जाता

कैसा है मुझसे नाता तुम्हारा दोस्तों,
छुड़ाया भी नहीं जाता और निभाया भी नहीं जाता

याद

जैमीन शाह -"भगवत", वरिष्ठ सहायक

दिन तो बीत जाएगा तेरी याद में,
पर रात का आलम न जाने कैसे कटेगा ?
बीते हुए एक-एक पल को याद करता हूं,
पर यादों का सिलसिला कैसे कटेगा ?
आगे बसंत तो बहुत आएंगे,
पर ये पतझड़ कैसे कटेगा ?
मेरी नज़र से बहुत दूर हो गई तू,
मगर मेरी आवाज किस तरह पहुंचेगी तुझ तक।
खोजता हूँ हर घर, हर वृक्ष और चहकते पंछियों में,
मगर मेरी नज़र कैसे पहुँचेगी तुझ तक ?
जैसे अचानक मिली तू और खो गई क्षितिज में कहीं,
अब मेरा शेष अभिशप्त जीवन कटे कैसे ?
अंजलि अर्पण करते मन बैठ जाता है,
श्रद्धांजलि देते शब्द खूट जाते हैं।
प्रेम का एहसास भी जाता रहा,
यादें और तेरी तस्वीर शेष रह गईं।
बसंत खिली भरपूर और तू याद आई,
नदियां बनी नुपूर और तू याद आई।
बांसुरी बजी क्षितिज के उपवन में और तू याद आई,
नाचते हुए मयूर को देखा और तू याद आई।
आम की डाल पर पड़े झूले और तू याद आई,
कोयल कूकी मधुर और तू याद आई।

****

<u>**कहानी**</u>

नया सवेरा

- सोमा करनावट
सहायक, वित्त एवं लेखा प्रभाग

"प्रिया, जरा यह प्रेजेंटेशन देख लो, तो मैं इसे फाइनल कर दूँ।"

"पाँच मिनिट में आती हूँ, मम्मी मुझे छाछ वाले गट्टे बनाना सिखा रही हैं।"

पूर्वेश मन ही मन झुँझलाया। जब देखो मम्मी और प्रिया रसोई में ही लगी रहती हैं। प्रिया यह प्रेजेंटेशन देख ले तो वह जर्मनी के क्लाइंट के ऑर्डर पर काम करना शुरू करे।

प्रिया की खूबसूरती और मासूमियत ने तो पूर्वेश को प्रभावित किया ही था, उसकी एम.बी.ए. की डिग्री का भी खासा असर हुआ था। प्रिया को बिजनेस की बारीकियों का अच्छा ज्ञान था और वह बिजनेस के लिए बिलकुल सही निर्णय लेती थी। इस वजह से पूर्वेश भारत की ज़िम्मेदारी प्रिया पर डालकर अपने बिजनेस को यूरोप तक बढ़ाने की तैयारी में था। उसका सपना था कि अगले पाँच वर्षों में वह अपनी कंपनी को विदेशों के बड़े-बड़े शहरों तक ले जाए।

पूर्वेश जानता था कि उसके इस सपने को पूरा करने की काबिलियत प्रिया में थी, लेकिन वह घर की जिम्मेदारियों में उलझ जाती थी। पूर्वेश चाहता था कि प्रिया भारत का काम संभाल ले तो वह पूरी तरह यूरोप के काम में लग जाए।

उधर पूर्वेश की माँ की दिली इच्छा थी कि बहू घर संभाल ले तो वे चैन से प्रभु-स्मरण में अपना समय बिताएँ। उन्हें जब भी मौका मिलता, वे प्रिया को एक अच्छी गृहिणी बनने के तरीके समझाने लगतीं। उन्हें लगता था कि कंपनी तो बेटा अच्छी तरह चला ही रहा है। बहू ऑफिस में समय बर्बाद करने की जगह घर की व्यवस्था पर ध्यान दे तो ज्यादा अच्छा रहेगा।

प्रिया समझती थी कि पूर्वेश और मम्मी दोनों को उससे बहुत उम्मीदें हैं और वह उन पर खरी उतरने की कोशिश करती थी। मगर उसकी कोशिशें कामयाब नहीं हो पाती थीं। वह ऑफिस का काम देखने जाती तो मम्मी का चेहरा उतर जाता और घर के कामों में लगती तो पूर्वेश खीज उठता। इस कशमकश में वह परेशान हो जाती। वह कभी-कभी अकेले में रो देती थी कि घर में कुल दो तो सदस्य हैं और वह दोनों को ही खुश नहीं रख पा रही है।

धीरे-धीरे उसने खुद के लिए समय निकालना बिलकुल बंद कर दिया। आराम के समय में भी कटौती कर दी। अब वह सुबह पाँच बजे उठकर झटपट घर के काम करती। दस बजे पूर्वेश के साथ ऑफिस चली जाती। वहाँ से शाम छह बजे घर आकर शाम का खाना बनाना व अन्य काम खत्म करती। रात को बारह-एक बजे तक फिर ऑफिस की फाइलें, प्रेजेंटेशन वगैरह तैयार करके बिस्तर पर गिरती तो जैसे एक ही पल में अगली सुबह आ जाती। इस दिनचर्या से पूर्वेश और मम्मी दोनों खुश थे और उन्हें खुश देखकर प्रिया अपनी थकान भूल जाती थी।

कुछ महीने इसी तरह निकल गए। आखिर प्रिया के शरीर ने इस अत्याचार का विरोध करना शुरू किया। उसे खाने से अरुचि हो गयी, नींद भी ठीक से नहीं आती थी। चेहरा बिलकुल पीला पड़ गया था। लेकिन उसने इस बात पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। एक दिन वह चक्कर खाकर गिर पड़ी। पूर्वेश और मम्मी घबरा गए। उन्होंने तुरंत डॉक्टर को बुलाया। पूरी जाँच करने के बाद डॉक्टर दोनों पर बरस पड़ीं - “आप इस लड़की की जान लेना चाहते हैं क्या”?

दोनों एकसाथ बोले - “क्या हुआ डॉक्टर ?”

इसकी हालत साफ बता रही है कि यह अपने खानपान, आराम का बिलकुल ध्यान नहीं रख रही है। खुद को जरूरत से ज्यादा थका रही है। इसे आराम और पोषण की सख्त जरूरत है। अगर इसे फिर से इस हालत में न पहुँचना हो तो काम के साथ खुद का भी ध्यान रखना होगा”।

अब पूर्वेश और मम्मी की समझ में आया कि पिछले कुछ महीनों से प्रिया की सेहत गिरती क्यों जा रही थी। उन्हें बेहद अफसोस हुआ कि इस बात पर उनका ध्यान क्यों नहीं गया। प्रिया को होश आने तक उनके बीच हुई बातचीत से उन्हें समझ आ गया कि वे दोनों ही अपनी-अपनी महत्वाकांक्षाएँ प्रिया पर लाद रहे थे।

प्रिया को होश आया तो उसने अपने को अस्पताल में पाया। पास में पूर्वेश और मम्मी भी बैठे दिखे। दोनों ने प्रिया से माफी माँगी और वादा किया कि वे उस पर अनावश्यक बोझ नहीं डालेंगे। घर और ऑफिस के कामों में तालमेल बैठाने में मदद करेंगे और उसके स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखेंगे। घर आने के बाद प्रिया बहुत खुश थी। उसे लग रहा था, मानो उसकी जिंदगी में एक नया सवेरा हुआ है।

जो कुछ मैंने पाया वह रब की महेरबानी है

जसपालकौर भाटिया, जूनियर इंजीनियर, पी.एफ.डी.

बहुत से लोगों ने बहुत सी अच्छी-अच्छी बातें कही हैं......
हम हमेशा पढते हैं...किसने, कब, कहां और कब कही हमें पता नहीं होता
परंतु उस में से कुछ बातें मुझे अच्छी लगी जो मैं यहाँ प्रस्तुत कर रही हूं.....
आप भी पढ़े यदि अच्छी लगें तो सोचें और जरूरत लगे तो जीवन में उतारने की कोशिश करें, मेरी तरह....

तीन चीजों का हमेशा, ध्यान रखें.....विश्वास, वचन एवम् रिश्ते......
क्योंकि, जब वह टूटते हैं,,,आवाज नहीं होती, वह कब टूटे पता ही नहीं चलता...
और जब पता चलता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।....

किसी श्मशान के बाहर लिखा था....
मंजिल तो तेरी यही थी...
जिंदगी गुजर गयी आते आते.....
क्या मिला तुझे इस दुनिया से..
अपनों ने ही जला डाला तुझे जाते जाते...

सफलता आपको हमेशा अकेले में गले लगाती है।.
परंतु असफलता हमेशा सबके बीच में तमाचा लगाती है।..
यही जिंदगी है।....

ईश्वर का न्याय कितना अद्भुत है।..
पांच मन गेहूं की बोरी जो मजदूर उठा सकता है वह उसे खरीद नहीं सकता
और जो खरीद सकता है वह उसे उठा नहीं सकता.....

समझे बगैर किसीको पसंद मत करना,
नासमझी में किसी को खो मत देना,
गुस्सा शब्दों में होता है, दिल में नहीं
उसमें संबंधों पर पूर्णविराम ना रख देना...

जिंदगी शांति से जीने के लिए दो चीजें अपनाओ....
एक, जिसे आप भूल नहीं सकते उसे माफ कर दो....
दूसरी, जिसे आप माफ नहीं कर सकते उसे भूल जाओ..

याद रखिये....
आपकी मौजूदगी में जो आपसे डरता है,
वो आपकी गैरमौजूदगी में आपको धिक्कारता है।...

जो सोचा वह कभी ना हो और जो सोचा नहीं वही हो।...इसी का नाम जिंदगी है।...

आपके लिए कोई रोये और आपके कारण कोई रोये.....दोनों में बहुत फर्क है।...

जब परिस्थितियां मनुष्य के अनुकूल होती हैं तो वह सुखी होता है,
परंतु जब मनुष्य अपने आप को परिस्थितियों के अनुकूल बना लेता है तो वह सब से सुखी होता है।..

वक्त भी सिखाता है और टीचर भी, पर
दोनों में फर्क सिर्फ इतना है कि
टीचर सिखा के इम्तेहान लेता है और
वक्त इम्तेहान ले कर सिखाता है

आखिर में.....
जो कुछ मैंने खोया वह मेरी नादानी थी और
जो कुछ मैंने पाया वह रब की महेरबानी है।....
धन्यवाद सह.....

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र/ विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट में सितंबर 2013 के दौरान संपन्न हिंदीं माह की रिपोर्ट

सैक/ डेकू में दिनांक 19 अगस्त 2013 से 18 सितंबर 2013 तक हिंदी माह का आयोजन बड़े हर्षोल्लास के साथ किया गया। हिंदी माह के उद्‌घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ.घनानंद शर्मा, सेवानिवृत प्रोफेसर, सहजानंद आर्ट्स कॉलेज, अहमदाबाद उपस्थित रहे। समारोह की अध्यक्षता श्री शांतनु चौधरी, उप निदेशक-एसआईपीए, सैक ने की। इस अवसर पर श्री बी.आर.राजपूत, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी तथा श्रीमती नीलू सेठ, हिंदी अधिकारी भी मंच पर आसीन थे। हिंदी माह के उद्‌घाटन समारोह के बाद डॉ.घनानंद शर्मा ने सैक पुस्तकालय द्वारा आयोजित हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का उद्‌घाटन किया, यह प्रदर्शनी पूरे हिंदी माह के दौरान सैक पुस्तकालय में लगी रही।

माह के दौरान हिंदी तथा हिंदीतर भाषा वर्गों के लिए आयोजित विभिन्न 12 हिंदी प्रतियोगिताओं में केंद्र के 1150 से भी अधिक स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया और साथ ही गत वर्ष की तरह कर्मचारियों के परिवार के सदस्यों (विवाहितियों और बच्चों) के लिए भी 05 हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें सभी ने पूरे उत्साह से भाग लिया।

18 सितंबर 2013 को अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (सैक) के विक्रम हॉल में हिंदी माह पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री आ.सी.किरण कुमार, निदेशक, सैक ने की। श्री विलास पलसुले, निदेशक, डेकू और श्री बी.आर.राजपूत, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी भी मंच पर आसीन थे। समारोह के दौरान केंद्र के कर्मचारियों के अलावा, उनके परिवार के पुरस्कार विजेता सदस्य भी उपस्थित थे।

उद्‌घाटन समारोह के दौरान संबोधित करते हुए डॉ.घनानंद शर्मा, (बाएं से) श्री बी.आर.राजपूत, श्री शांतनु चौधरी तथा श्रीमती नीलू सेठ (इंसैट में हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का उद्‌घाटन करते हुए डॉ.शर्मा)

श्री किरण कुमार जी ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि केंद्र के सभी अधिकारी/ कर्मचारी अपने कार्यालयीन कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें, भारत सरकार द्वारा समय समय पर जारी राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित आदेशों और नियमों का स्वयं अनुपालन करें और अपने अनुभाग प्रभाग में भी इनका अनुपालन सुनिश्चित कराएं, जिससे सरकार द्वारा निर्धारित राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी अपने लक्ष्यों को मात्र प्राप्त ही न करें, बल्कि लक्ष्य से अधिक कार्य करके अपनी विशेष पहचान बनाएं।

पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान श्री आ.सी.किरण कुमार (मध्य में) श्री विलास पलसुले (दायीं ओर) श्री बी.आर.राजपूत (बायीं ओर)

इससे पूर्व, श्री विलास पलसुले, निदेशक, डेकू ने कहा कि आज लोग अच्छी हिंदी जानते हुए भी हिंदी का कम प्रयोग कर रहे हैं, अब हमें लोगों की मानसिकता बदलने की आवश्यकता है, जहां वे अपनी मातृभाषा और राजभाषा के प्रयोग में गौरव का अनुभव करें। श्री बी.आर. राजपूत, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी ने माह के दौरान संपन्न कार्यक्रमों की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की और केंद्र में हो रहे राजभाषा कार्यान्वयन से सभी को अवगत कराया।

श्रीमती नीलू सेठ, हिंदी अधिकारी ने मंच संचालन किया, पुरस्कारों की उद्घोषणा सुश्री रजनी सेमवाल, वरि.हिंदी अनुवादक ने की और कार्यक्रम के अंत में श्री सोनू जैन, हिंदी अनुवादक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

हिंदी माह के दौरान विजेता प्रतिभागियों की सूची 2013

01 हिंदी टाइपिंग प्रतियोगिता

श्री वेद प्रकाश			प्रथम पुरस्कार
कु वारडे हिरण बी			द्वितीय पुरस्कार
श्रीमती प्रेसी रॉबिन			तृतीय पुरस्कार
डॉ अमिय बिश्वास	श्री अश्वनी कुमार	श्री नायर बीनू देवपालन	सांत्वना पुरस्कार
श्री जगदीशन एम मुदलियार	सुश्री सोमा करनावट	श्री आशिष सोनी	सांत्वना पुरस्कार

02 हिंदी टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता

हिंदीतर भाषा वर्ग **हिंदी भाषा वर्ग** **पुरस्कार**

श्री देवांग मांकड	श्री राहुल गुप्ता	प्रथम
श्री बी० एन० शर्मा	श्री प्रदीप सोनी	द्वितीय
श्री प्रतीक जैन	श्री सर्वेश्वर प्रसाद व्यास	तृतीय
श्री अमिय विश्वास	श्री अभिनव क्षितिज	प्रोत्साहन
श्री जगदीशन मुदलियार	श्री अश्वनी कुमार	प्रोत्साहन
श्री अपूर्व प्रजापति	श्रीमती नीरू जायसवाल	प्रोत्साहन
श्री दिलीपकुमार सी० मेहता	श्री जीतेन्द्र कुमार	प्रोत्साहन
श्री मनीष पंड्या	श्री प्रीतेश कुमार सिन्हा	प्रोत्साहन
डॉ० के० आर० मुरली	श्री कमलेश कुमार बराया	प्रोत्साहन

03 हिंदी शब्दज्ञान प्रतियोगिता

हिंदीतर भाषा वर्ग	**हिंदी भाषा वर्ग**	**पुरस्कार**
श्री निलेश आर सोनी	श्री विशाल अग्रवाल	प्रथम
श्रीमती क्रिष्ना एस मकानी	श्री अमर ज्योति	द्वितीय
श्री बी एन शर्मा	श्री सचिन कुमार मौर्य	तृतीय
डॉ अमिय बिश्वास	श्रीमती आभा छाबड़ा	प्रोत्साहन
श्रीमती अर्चना दीपक भट्ट	श्रीमती आरती जोशी	प्रोत्साहन
श्री आशिष सोनी	श्री कमलेश कुमार बराया	प्रोत्साहन
श्रीमती ऋचा चक्रवर्ती	श्री जितेन्द्र सिंह	प्रोत्साहन
श्रीमती गीता एन पटेल	श्री दिनेश नौलखा	प्रोत्साहन
श्री देवांग मांकड	श्रीमती श्वेता शर्मा	प्रोत्साहन
श्रीमती पारूल अजमेरा	श्री संजय कुमार कसोदनिया	प्रोत्साहन
श्री मनीष वी पंड्या	श्री सतीश प्रसाद	प्रोत्साहन
श्री हिरण बी वारडे	श्री सुगंध मिश्रा	प्रोत्साहन
श्री संजयकुमार उपाध्याय	कु सोमा करनावट	प्रोत्साहन

04 हिंदी आशुभाषण प्रतियोगिता

हिंदीतर भाषा वर्ग	**हिंदी भाषा वर्ग**	**पुरस्कार**
श्री देवांग मांकड	श्री अश्वनी कुमार	प्रथम
श्री आशिष सोनी	श्री मनविनायक शुक्ल	द्वितीय
श्री देवेन रावल	श्री सच्चिदानंद	तृतीय
श्री आदित्य पतिंगे	डॉ राहुल निगम	प्रोत्साहन
श्री मेहुल पंडया	श्री निष्काम जैन	प्रोत्साहन
श्री अमिय विश्वास	डॉ आभा छाबडा	प्रोत्साहन
श्री प्रशांत	श्री राहुल गुप्ता	प्रोत्साहन
श्री जैमिन शाह	-	प्रोत्साहन

05 हिंदी श्रुतलेखन प्रतियोगिता

हिंदीतर भाषा वर्ग	**हिंदी भाषा वर्ग**	**पुरस्कार**
श्री मनीष वी पंड्या	सुश्री आरती जोशी	प्रथम
सुश्री श्वेता किरकिरे	श्री रंजन परनामी	द्वितीय
श्रीमती अर्चना डी भट्ट	श्री भुवनेश्वर सेमवाल	तृतीय
श्री अमिय विश्वास	श्री प्रणवकुमार पाण्डेय	प्रोत्साहन
श्री सी चौहाण यू	श्री पुरूषोत्तम गुप्ता	प्रोत्साहन
श्री क्षितिज पंडया	श्री विशाल अग्रवाल	प्रोत्साहन
सुश्री गीता पटेल	श्री निशान्त शुक्ल	प्रोत्साहन
श्री आशिष सोनी	श्री सुनील सिंह कुशवाहा	प्रोत्साहन
श्री अपूर्व बी प्रजापति	श्री प्रदीप सोनी	प्रोत्साहन
सुश्री उष्मा जयंतकुमार सारडा	श्री सत्यप्रिय मित्तल	प्रोत्साहन
श्री वारडे हिरण बी	कु सोमा करनावट	प्रोत्साहन
सुश्री गीता मामतोरा	श्री पंकज श्रीवास्तव	प्रोत्साहन
सुश्री सुश्मिता पटेल	सुश्री श्वेता शर्मा	प्रोत्साहन

06 हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता

हिंदीतर भाषा वर्ग	**हिंदी भाषा वर्ग**	**पुरस्कार**
श्री दिलीप कुमार सी मेहता	श्री कमलेश कुमार बराया	प्रथम
श्री प्रतीक जैन	श्री सत्यप्रिय मित्तल	द्वितीय

श्री देवांग मांकड़	श्री प्रणव कुमार पाण्डेय	तृतीय
श्री बी एन शर्मा	श्री जितेंद्र कुमार	प्रोत्साहन
श्री अमिय विश्वास	श्री संगीत कुमार मिश्र	प्रोत्साहन
श्री अपूर्व बी प्रजापति	श्री रोहित कुमार	प्रोत्साहन
श्री सूर्यकांत जे सोलंकी	श्री रंजन परनामी	प्रोत्साहन
श्री मुदलियार जगदीशन	श्री ईश्वरलाल प्रजापति	प्रोत्साहन
श्री ठक्कर हार्दिक बी	श्री अभय जैन	प्रोत्साहन
	श्री प्रीतेश कुमार सिन्हा	प्रोत्साहन
	सुश्री आरती जोशी	प्रोत्साहन
	डॉ आभा छाबड़ा	प्रोत्साहन
	श्री प्रतीक बंसल	प्रोत्साहन

07 हिंदी काव्यपाठ प्रतियोगिता

हिंदीतर भाषा वर्ग	**हिंदी भाषा वर्ग**	**पुरस्कार**
श्रीमती शेरिन जोन्सन	श्री मनोज निमेष	प्रथम
श्री मनुभाई जी परमार	श्री अश्वनी कुमार	द्वितीय
श्रीमती सुनीता प्रजापति	श्री निशांत शुक्ल	तृतीय
श्री सुनील भट्ट	सुश्री कृति खत्री	प्रोत्साहन
श्री मनोहर चावडा	सुश्री पूजा कक्कड	प्रोत्साहन
श्री संजय पंचाल	श्री अभिनव क्षितिज	प्रोत्साहन
सुश्री क्रिष्णा मकानी	श्री नरविंदर सिंह जैसवाल	प्रोत्साहन
	श्री विवेक शर्मा	प्रोत्साहन
	श्री निष्काम जैन	प्रोत्साहन

08 हिंदी निबंध प्रतियोगिता

हिंदीतर भाषा वर्ग	**हिंदी भाषा वर्ग**	**पुरस्कार**
श्री आदित्य कुमार पतिंगे	सुश्री सोमा करनावट	प्रथम
श्री दिलीप कुमार सी महेता	श्री दिनेश कुमार अग्रवाल	द्वितीय
श्री मुदलियार जगदीशन	श्री संगीत कुमार मिश्र	तृतीय
श्री आनंद पाठक	श्री मुकेश कुमार मिश्र	प्रोत्साहन
श्री देवांग मांकड़	श्री आदित्य डागर	प्रोत्साहन
सुश्री हिरण बी वारडे	श्री अजय कुमार सिंह	प्रोत्साहन
डॉ अमिय बिश्वास	डॉ आभा छाबड़ा	प्रोत्साहन
सुश्री क्रिष्ना एस मकानी	श्री जितेन्द्र कुमार	प्रोत्साहन
श्री प्रतीक अ जैन	श्री प्रितेश कुमार सिन्हा	प्रोत्साहन

9 हिंदी वर्ग पहेली प्रतियोगिता

हिंदीतर भाषा वर्ग	**हिंदी भाषा वर्ग**	**पुरस्कार**
श्री निलेश आर सोनी	श्री विशाल अग्रवाल	प्रथम
सुश्री क्रिष्ना एस मकानी	श्री अमर ज्योति	द्वितीय
श्री बी एन शर्मा	श्री सचिन कुमार मौर्य	तृतीय
श्रीमती ऋचा चक्रवर्ती	श्री सुगन्ध मिश्रा	प्रोत्साहन
श्री मनीष वी पंड्या	श्री कमलेश कुमार बराया	प्रोत्साहन
डॉ अमिय बिश्वास	श्री जितेन्द्र सिंह	प्रोत्साहन
श्रीमती पारूल अजमेरा	श्री संजय कुमार कसोदनिया	प्रोत्साहन
श्री आशिष सोनी	श्री सतीश प्रसाद	प्रोत्साहन
श्री संजयकुमार उपाध्याय	डॉ आभा छाबड़ा	प्रोत्साहन
श्रीमती गीता एन पटेल	सुश्री सोमा करनावट	प्रोत्साहन
श्रीमती अर्चना दीपक भट्ट	श्री दिनेश नौलखा	प्रोत्साहन
श्री देवांग मांकड	श्रीमती श्वेता शर्मा	प्रोत्साहन
श्री वारडे हिरण बी	श्रीमती आरती जोशी	प्रोत्साहन

10 हिन्दी कहानी लेखन प्रतियोगिता

हिंदीतर भाषा वर्ग	**हिंदी भाषा वर्ग**	**पुरस्कार**
सुश्री क्रिष्णा एस मकानी	सुश्री पूजा कक्कड़	प्रथम
प्रियंका बी बोदर	श्री राहुल श्रीवास्तव	द्वितीय
श्री शेरिन जोन्सन	श्री मुकेश कुमार मिश्र	तृतीय
श्री के आर मुरली	सुश्री शिखा गुप्ता	प्रोत्साहन

श्री अपूर्व प्रजापति	श्री अभिनव क्षितिज	प्रोत्साहन
ऋचा चक्रवर्ती	श्री अखिलेश शर्मा	प्रोत्साहन
श्रीमती वैशाली आर वाघेला	श्री राहुल गुप्ता	प्रोत्साहन
श्री हिरण बी वारडे	सुश्री श्वेता तन्ना	प्रोत्साहन
श्री आदित्य कुमार पतिंगे	श्री जीतेन्द्र कुमार	प्रोत्साहन

11 हिंदी सुलेखन प्रतियोगिता

वाहनचालक वर्ग	अटेंडेंट वर्ग	
श्री आर टी दवे	श्री अजय दातनिया	प्रथम
श्री जे एच पटेल	श्री यु एम भील	द्वितीय
श्री वी एम ठक्कर	श्री के जी कंसारा	तृतीय
श्री मनोहर एम चावड़ा	श्री एस के दंतानी	प्रोत्साहन
श्री जे आर वेगडा	श्री बी एन वाघेला	प्रोत्साहन
श्री बी एम परमार	श्री निकुंज दवे	प्रोत्साहन
श्री जे डी वोरा	श्री गोपाल वाघेला	प्रोत्साहन
	श्री ए एन गोहिल	प्रोत्साहन
	श्री दीपक एन परमार	प्रोत्साहन

12 हिन्दी प्रश्नमंच

प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार
श्री जगदीशन एम मुदलियार	तनुल गुप्ता	श्री जे बी वडगामा
श्री विशाल अग्रवाल	श्री निष्काम जैन	श्री विनोद चौधरी

प्रोत्साहन पुरस्कार

श्री अखिलेश शर्मा	श्री के एम भाटी	पायल शर्मा	श्री विवेक कुमार सिंह
श्री अशोक कुमार साहू	क्रांति घोष गौतम	श्री प्रदीप सोनी	शिल्पी सोनी
श्री आर आर सेठिया	जलश्री हर्षित देसाई	श्री मुकेश आर श्रीवास्तव	श्री सत्यपाल सिंह
श्री उत्कर्ष	निर्मला जे मंदानी	श्री रणधीर सिंह	श्री सुगंध मिश्रा

श्रोतागण पुरस्कार

श्री अज़हर सैयद	श्री जितेन्द्र कुमार	श्री डीएनवीएसएन मूर्ति	श्री धर्मेन्द्र सिंह तोमर	श्री रामदयाल सिंह
श्री अपूर्व बी प्रजापति	श्री डी जे भट्ट	श्री दिलीप कुमार सी मेहता	श्री रमेश कुमार	श्री सर्वेश्वर प्रसाद व्यास

कर्मचारियों के परिवार के विजेता प्रतिभागियों की सूची

क्र सं	नाम	सुपुत्र पत्नी/	कर्मचारी का नाम	प्रतियोगिता	पुरस्कार
1.	कु. दिप्ती अग्रवाल	सुपुत्री	श्री दिनेश कुमार अग्रवाल	आशुभाषण	प्रथम
2.	कु. धृति सेठ	सुपुत्री	श्रीमती नीलू सेठ	आशुभाषण	द्वितीय
3.	मास्टर ईशान पटनायक	सुपुत्र	श्रीमती रचना पटनायक	आशुभाषण	तृतीय
4.	कु. ब्रिंदा एम पटेल	सुपुत्री	श्रीमती सुश्मिता पटेल	आशुभाषण	सांत्वना
5.	मास्टर अरिंजय व्यास	सुपुत्र	श्री एस पी व्यास	वादविवाद-	प्रथम
6.	मास्टर ए एस चंद्रशेखर	सुपुत्र	डॉ ए सुब्बाराव	वादविवाद-	द्वितीय
7.	मास्टर इवान्स	सुपुत्र	श्रीमती एम सी भरूचा	वादविवाद-	तृतीय
8.	कु. मुस्कान आर सोहंदा	सुपुत्री	श्री रमेश सोहंदा	श्रुतलेखन	प्रथम
9.	कु. अरुंधती शर्मा	सुपुत्री	श्री अजय शर्मा	श्रुतलेखन	द्वितीय
10.	कु. सुमेधा चौरसिया	सुपुत्री	श्री प्रताप चौरसिया	श्रुतलेखन	तृतीय
11.	मास्टर हर्ष सुखेजा	सुपुत्र	श्री अनिल सुखेजा	श्रुतलेखन	सांत्वना
12.	कु. शुभी चौरसिया	सुपुत्री	श्री प्रताप चौरसिया	श्रुतलेखन	सांत्वना
13.	कु. ईवा एम आर्य	सुपुत्री	श्री मुकेश डी आर्य	श्रुतलेखन	सांत्वना
14.	मास्टर प्रत्यूष अग्रवाल	सुपुत्र	श्री विशाल अग्रवाल	श्रुतलेखन	सांत्वना
15.	कु. अन्विता सिंह	सुपुत्री	श्री अरविंद सिंह	सुलेखन	प्रथम
16.	मास्टर अभिनव पी एस	सुपुत्र	श्री श्रीनिवासन	सुलेखन	द्वितीय
17.	कु. हनी आषिश सोनी	सुपुत्री	श्री आशिष सोनी	सुलेखन	तृतीय
18.	कु. शिवानीप्रजापति	सुपुत्री	श्री राधेश्याम प्रजापति	सुलेखन	सांत्वना

19.	मास्टर निश्चल बराया	सुपुत्र	श्री कमलेश कुमार बराया	सुलेखन	सांत्वना
20.	मास्टर शिवम प्रजापति	सुपुत्र	श्री राधेश्याम प्रजापति	सुलेखन	सांत्वना
21.	कु. अपेक्षा सुखेजा	सुपुत्री	श्री अनिल सुखेजा	सुलेखन	सांत्वना
22.	श्रीमती प्रतिभा अग्रवाल	पत्नी	श्री विशाल अग्रवाल	अंताक्षरी	प्रथम
23.	श्रीमती प्रीति अग्रवाल	पत्नी	श्री दिनेश कुमार अग्रवाल	अंताक्षरी	प्रथम
24.	श्रीमती अनीता शर्मा	पत्नी	श्री नितिन कुमार	अंताक्षरी	प्रथम
25.	श्रीमती पायल	पत्नी	श्री उमेश कुमार	अंताक्षरी	प्रथम
26.	श्रीमती वैशाली गायकवाड़	पत्नी	श्री राजेंद्र गायकवाड़	अंताक्षरी	द्वितीय
27.	श्रीमती सुमन जैन	पत्नी	श्री संजीव जैन	अंताक्षरी	द्वितीय
28.	श्रीमती सीमा सिंघल	पत्नी	श्री आलोक सिंघल	अंताक्षरी	द्वितीय
29.	श्रीमती वैशाली पाठक	पत्नी	श्री आनंद पाठक	अंताक्षरी	द्वितीय
30.	श्रीमती आरती सोनी	पत्नी	श्री आशिष सोनी	अंताक्षरी	तृतीय
31.	श्रीमती प्रीति शाह	पत्नी	श्री हिमांशु शाह	अंताक्षरी	तृतीय
32.	श्रीमती जयश्री घोणिया	पत्नी	श्री धीरेंद्र घोणिया	अंताक्षरी	तृतीय
33.	श्री गणेश भनारकर	पति	श्रीमती गायत्री भनारकर	अंताक्षरी	तृतीय
34.	श्रीमती रूपाली गुप्ता	पत्नी	श्री मनीष कुमार	अंताक्षरी	तृतीय
35.	श्रीमती शिल्पा मिश्रा	पत्नी	श्री मुकेश मिश्र	अंताक्षरी	तृतीय
36.	श्रीमती ममता आर्या	पत्नी	श्री ए एस आर्या	अंताक्षरी	तृतीय
37.	श्रीमती सुरेखा राजपूत	पत्नी	श्री बी आर राजपूत	अंताक्षरी	तृतीय
38.	श्रीमती जयश्री त्रिवेदी	पत्नी	श्री चैतन्य त्रिवेदी	अंताक्षरी	सांत्वना
39.	श्रीमती रेनू मित्तल	पत्नी	श्री सत्यप्रिय मित्तल	अंताक्षरी	सांत्वना
40.	डॉ मनप्रीत गिल	पत्नी	श्री एस एस गिल	अंताक्षरी	सांत्वना
41.	श्रीमती वर्तिका सिंह	पत्नी	श्री एस पी सिंह	अंताक्षरी	सांत्वना
42.	श्रीमती निमिषा शर्मा	पत्नी	श्री अखिलेश शर्मा	अंताक्षरी	सांत्वना
43.	श्रीमती अंकिता जैन	पत्नी	श्री निष्काम जैन	अंताक्षरी	सांत्वना
44.	श्रीमती अमिया शुक्ला	पत्नी	श्री अमित शुक्ला	अंताक्षरी	सांत्वना
45.	श्रीमती साधना सिंह	पत्नी	श्री सच्चिदानंद सिंह	अंताक्षरी	सांत्वना
46.	श्रीमती अनुजा शर्मा	पत्नी	श्री सी पी शर्मा	अंताक्षरी	सांत्वना
47.	श्रीमती कमलाबेन बी वाघेला	पत्नी	श्री डी बी वाघेला	अंताक्षरी	सांत्वना
48.	श्रीमती पूजा चौहान	पत्नी	श्री के एस चौहान	अंताक्षरी	सांत्वना
49.	श्रीमती नयना के पटेल	पत्नी	श्री किशोर पटेल	अंताक्षरी	सांत्वना
50.	श्रीमती निरीक्षा वार्ष्णेय	पत्नी	श्री जितेंद्र कुमार	अंताक्षरी	सांत्वना
51.	श्रीमती माधवी गोंडे	पत्नी	श्री राजीव कुमार	अंताक्षरी	सांत्वना
52.	श्रीमती विभा एच मेहता	पत्नी	श्री हसमुख मेहता	अंताक्षरी	सांत्वना
53.	श्रीमती सुप्रिया बारापत्रे	पत्नी	श्री गुलशन बारापत्रे	अंताक्षरी	सांत्वना
54.	श्रीमती दीपिका जे हलपति	पत्नी	श्री जतिन हलपति	अंताक्षरी	सांत्वना
55.	श्रीमती अर्पिता मतई	पत्नी	श्री सुनील मतई	अंताक्षरी	सांत्वना
56.	श्रीमती अल्पना सिंह	पत्नी	श्री अरविंद के सिंह	अंताक्षरी	सांत्वना
57.	श्रीमती लकी आर पटेल	पत्नी	श्री रजनीकांत आर पटेल	अंताक्षरी	सांत्वना
58.	श्रीमती विनीता व्यास	पत्नी	श्री एस पी व्यास	अंताक्षरी	सांत्वना
59.	श्री कुणाल महिंद्रू	पति	डॉ आभा छावडा	अंताक्षरी	सांत्वना
60.	श्रीमती नीतू सिंह	पत्नी	श्री सत्यपाल सिंह	अंताक्षरी	सांत्वना

***

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र/ विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट के संयुक्त तत्त्वावधान में संपन्न अंतर केंद्र हिंदी तकनीकी संगोष्ठी 2013 की रिपोर्ट

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद में दिनांक 14-15 अक्तूबर 2013 को"**अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की आपदा प्रबंधन में भूमिका**" विषय पर दो दिवसीय अंतर केंद्र हिन्दी तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 14 अक्तूबर 2013 को पूर्वाह्न 1000 बजे सैक के न्यू ऑडीटोरियम में श्री आ.सी.किरण कुमार, निदेशक, सैक की अध्यक्षता में संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया, इस अवसर पर मुख्य अतिथि/अभिभाषक के रूप में श्री अश्विनी कुमार (भा.प्र.से.), प्रबंध निदेशक, गुजरात शहरी विकास कंपनी लिमिटेड, गांधीनगर उपस्थित रहे। श्री विलास पलसुले, निदेशक, डेकू, श्रीमती मल्लिका महाजन, नियंत्रक, सैक/ अध्यक्ष, संगोष्ठी आयोजन समिति और श्री बी.आर.राजपूत, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, सैक/ सचिव, संगोष्ठी आयोजन समिति भी मंच पर आसीन थे।

संगोष्ठी में अंतरिक्ष विभाग / इसरो के विभिन्न केंद्र/ यूनिटों से पधारे वैज्ञानिक/ अभियंताओं और अधिकारियों ने भी सहभागिता की।

संगोष्ठी के दौरान मंच पर आसीन (दाएं से) श्रीमती मल्लिका महाजन, श्री अश्विनी कुमार, श्री आ.सी. किरण कुमार, श्री विलास पलसुले और श्री बी.आर.राजपूत

सर्वप्रथम, मंच पर आसीन सभी महानुभावों ने दीप प्रज्ज्वलित कर संगोष्ठी की औपचारिक उद्घाटन विधि संपन्न की। तदुपरांत, श्रीमती मल्लिका महाजन ने स्वागत भाषण देते हुए संगोष्ठी के आयोजन से जुड़े विविध पहलुओं से उपस्थित प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में भी अपने संक्षिप्त विचार रखे।

इससे पूर्व, सुश्री जलश्री ने अपने मधुर स्वरों में प्रभु-वंदना कर संगोष्ठी का शुभारंभ किया।

संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह के दौरान दीप प्रज्ज्वलन विधि

तदुपरांत, श्री अश्विनी कुमार, प्रबंध निदेशक, गुजरात शहरी विकास कंपनी लिमिटेड ने संगोष्ठी के लेख-संग्रह का विमोचन किया, लेख संग्रह संगोष्ठी के लेखक प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत 60 लेखों का संकलन है।

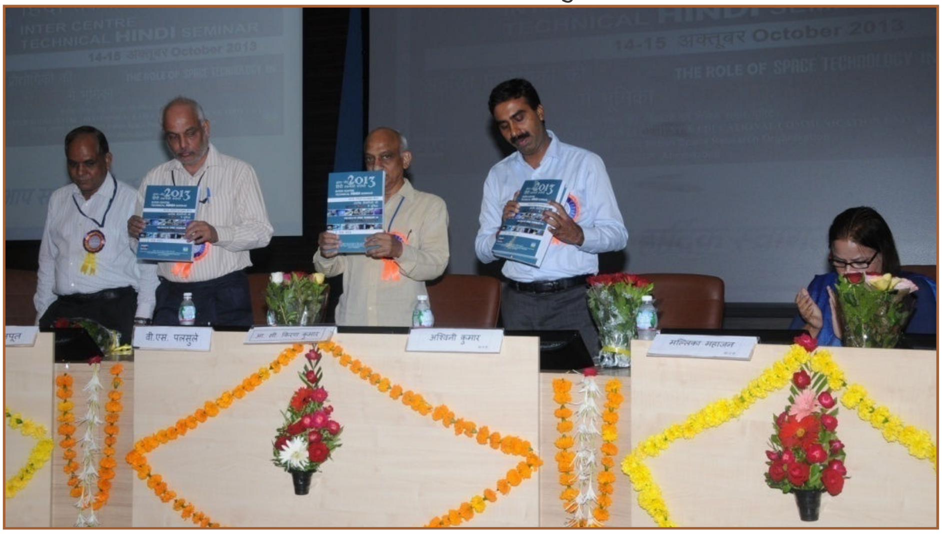

संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह के दौरान लेख-संग्रह का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि श्री अश्विनी कुमार

संगोष्ठी के लेख-संग्रह को सीडी के रूप में भी तैयार किया गया था, जिसका विमोचन श्री विलास पलसुले, निदेशक, डेकू ने किया। उक्त लेख संग्रह और सीडी की प्रतियां इसरो/ अंवि के विभिन्न केंद्र/ यूनिटों के पुस्तकालयों को उपलब्ध करायी गई हैं।

संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह के दौरान लेख-संग्रह का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि श्री अश्विनी कुमार

निदेशक, सैक के मार्गदर्शन में श्री सी.एन.लाल, प्रधान, ईक्यूसीडी तथा श्री दिनेश अग्रवाल, प्रधान, ईएफपीडी के विशेष प्रयासों के फलस्वरूप सैक के वैज्ञानिक/ अभियंताओं द्वारा विभिन्न तकनीकी विषयों पर हिंदी में निम्नानुसार सात पुस्तकें लिखी गईं :-

पुस्तक का शार्षक	लेखक
भारत की सांस्कृतिक धरोहर - झलकियां अंतरिक्ष से	श्वेता शर्मा, श्वेता मिश्रा एवं डॉअजय.
उपग्रहों में ताप नियंत्रण	कमलेश कुमार बराया
उपग्रह संचार एवं नौसंचालन अनुप्रयोग क्षेत्रः एक झलक	जितेंद्र खर्डे
प्रतिबिंब, संकेत और डाटा प्रकमण में सीपाः सैक का योगदान	देवांग मांकड़
उपग्रह संचार के सिद्धांत और ऐंटेनाः एक विहंगावलोकन	शीलेष वैष्णव
सागर के रंगः उपग्रह के संग	नीरा चतुर्वेदी एवं डॉ. अजय
सुदूर संवेदन हेतु विद्युत प्रकाशीय कैमरा - एक परिचय	संजीव मेहता, बी एन शर्मा अमिय बिश्वास एवं अंकुर जैन

उक्त पुस्तकों की सीमित प्रतियां सैक पुस्तकालय द्वारा मुद्रित की गईं, जिनका विमोचन श्री आ.सी.किरण कुमार, निदेशक, सैक, अहमदाबाद के कर-कमलों से किया गया।

संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह के दौरान पुस्तकों का विमोचन करते हुए श्री आ.सी.किरण कुमार

तत्पश्चात, उद्घाटन समारोह के मुख्य अभिभाषक श्री अश्विनी कुमार ने शहरी क्षेत्रों में घटने वाली विभिन्न आपदाओं स्थितियों और उनसे निपटने के लिए अपनाए जा रहे उपायों पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने इस परिप्रेक्ष्य में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की भूमिका की भी सराहना की। श्री पलसुले जी ने आपदा स्थितियों में इसरो की ओर से दी गई सेवाओं के बारे में अपने अनुभव सुनाए और बताया कि अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी आपदा के द्रुत उपशमन एवं पुनर्वास के लिए किस प्रकार महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है। अध्यक्षीय भाषण में श्री आ.सी. किरण कुमार ने इस प्रकार की संगोष्ठियों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला और संगोष्ठी की सफलता के लिए शुभकामनाएं दी।

उद्घाटन समारोह के अंत में, श्री बी.आर.राजपूत ने संगोष्ठी की रूपरेखा का संक्षिप्त परिचय देते हुए आभार ज्ञापन प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के दौरान अपने अभिभाषण के दौरान (बाएं से) श्री अश्विनी कुमार, श्री विलास पलसुले, श्री आ.सी.किरण कुमार एवं आभार ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए श्री बी.आर.राजपूत

उद्घाटन समारोह के पश्चात्, संगोष्ठी का छह तकनीकी सत्रों में आयोजन किया गया। दिनांक 14/10/2013 को तीन तकनीकी सत्र निम्नानुसार संपन्न हुएः

दिनांक- 14.10.2013

सत्र का नाम	नाम	सत्राध्यक्ष /सत्र संचालक
सत्र-1 (संचार एवं नौसंचालन)	श्री के.एस. परीख	सत्राध्यक्ष
समय - प्रात: 1130 - 13.15 बजे	श्री राजीव ज्योति	सत्र संचालक
सत्र-2 (अनुप्रयोग)	श्री पी.के पाल	सत्राध्यक्ष
समय - 1400 - 1530 बजे	श्री एस.एस. सरकार	सत्र संचालक
सत्र-3 (प्रौद्योगिकी)	श्री आर.के. अरोरा	सत्राध्यक्ष
समय - 1545-1800 बजे	श्री विक्रम देसाई	सत्र संचालक

इन सत्रों के समाप्त होने के पश्चात्, अंवि/ इसरो के विभिन्न केंद्र/ यूनिटों से पधारे प्रतिभागियों के हाथों से सैक परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, इस कार्यक्रम में सभी प्रतिभागियों ने उत्साह से भाग लिया और इसे खूब सराहा।

वृक्षारोपण कार्यक्रम में भाग लेते हुए संगोष्ठी के प्रतिभागी गण

संगोष्ठी के द्वितीय दिवस के दौरान शेष तीन सत्रों का संचालन निम्नानुसार किया गया:-

दिनांक- 15.10.2013

सत्र का नाम	नाम	सत्राध्यक्ष /सत्र संचालक
सत्र-4 (प्रौद्योगिकी)	डॉ. अजय	सत्राध्यक्ष
समय - 0930 - 1130 बजे	श्रीमती रचना पटनायक	सत्र संचालक
सत्र-5 (सामग्री एवं यंत्रावली अभियांत्रिकी)	श्री डी. सुब्रहमण्यम्	सत्राध्यक्ष
समय - 1145 - 1315 बजे	श्री ए.सी. माथुर	सत्र संचालक
सत्र-6 (प्रौद्योगिकी)	श्री सुरिन्दर सिंह	सत्राध्यक्ष
समय - 1400 - 1530 बजे	श्री ए.के. लाल	सत्र संचालक

उक्त सत्रों में कुल 48 आलेखों की पावर पाइंट प्रस्तुति की गई, सभी लेखकों ने ज्ञानवर्धक और प्रभावपूर्ण प्रस्तुतियां दी, 08 मिनिट की प्रत्येक प्रस्तुति के अंतिम दो मिनिट में प्रश्नकाल भी रखा गया, जिसमें उपस्थित श्रोताओं ने अपने प्रश्न रखे। आपदा पूर्व, आपदा के दौरान तथा आपदा के पश्चात् पुनर्वास कार्यक्रमों में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की उपयोगी एवं निर्णायक भूमिका पर विस्तृत परिचर्चा की गई।

पैनल चर्चा के दौरान सत्र अध्यक्ष अपने विचार प्रस्तुत करते हुए

सभी सत्राध्यक्षों द्‌वारा पैनल चर्चा का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें संगोष्ठी की विषयवस्तु के अनेक और पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम के अंत में श्री आ.सी.किरण कुमार और श्री विलास पलसुले ने लेखकों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए।

श्री आ.सी.किरण कुमार, निदेशक, सैक से प्रमाणपत्र ग्रहण करते हुए प्रतिभागी लेखकगण

श्री विलास पलसुले, निदेशक, डेकू से प्रमाणपत्र ग्रहण करते हुए प्रतिभागी लेखकगण

प्रमाण-पत्र वितरण के पश्चात् श्रीमती एस.एन.भाग्यलक्ष्मी, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), अंतरिक्ष विभाग, बेंगलूरु ने सैक में सफलतापूर्वक संपन्न अंतर केंद्र हिंदी तकनीकी संगोष्ठी के आयोजन के लिए सैक और डेकू को बधाई दी और अंतरिक्ष विभाग के विभिन्न केंद्र/यूनिटों में चलायी जा रही राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित गतिविधियों के बारे में सभी को अवगत कराया।

श्रीमती नीलू सेठ, हिंदी अधिकारी, सैक ने संगोष्ठी की तैयारी और संगोष्ठी के दौरान हुए अनुभवों का विस्तृत उल्लेख करते हुए आभार-ज्ञापन प्रस्तुत किया। संपूर्ण कार्यक्रम के दौरान श्रीमती पूजा श्रीवास्तव, वैज्ञानिक/ अभियंता, सैक ने बड़े प्रभावपूर्ण ढ़ंग से मंच संचालन किया।

* * * *

तकनीकी प्रभागों द्वारा किए गए सर्वश्रेष्ठ हिंदी कार्य के लिए 26 जनवरी 2013 को दिए गए पुरस्कारों की झलक

वर्ष 2013 के दौरान संपन्न हिंदी कार्यशालाओं की झलकियां

नियंत्रक, सैक के कर–कमलों द्वारा अभिव्यक्ति के षष्ठम् अंक का विमोचन

सैक/ डेकू में संपन्न हिंदी माह 2013 की झलकियां